ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

অইল কিৰণ OIL KIRAN | 2020 | वर्ष 17 अंक 26 |

सम्पादकीय

आपके समक्ष 'ऑयल किरण' का 26वां अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। आशा है कि आप सभी को यह नवीनतम अंक अवश्य पसंद आयेगा।

आज का समय ऐसी चुनौतियों से भरा हुआ है जिसके फलस्वरुप साहित्य का दायित्व बहुत बढ़ गया है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब समाज दिशाहीन हो जाता है, अप संस्कृति हावी हुई है, ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में साहित्य ने ही उसे संभाला है। हिन्दी भारतीय संस्कृति की संवाहक है, नदी की धारा की तरह उसे आगे ले जाती है। स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी और उसकी लोक भाषाओं ने जो स्वाधीनता की चेतना जगायी, संघर्ष के लिए आगे बढ़े, यह संघर्ष केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए ही नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए भी था। राजभाषा हिंदी को यह सिद्ध करने का समय आ गया है कि वह हमारी जमीन की, हमारे घर की भाषा है, जिसके वर्ण-वर्ण में अपनापन का भाव है, अपनी जड़ों से जुड़े रहने की चेतना है।

'ऑयल किरण' में हम सबका अनुभव है, जो बरबस ही शब्द रुप में पन्ने पर उभर आया है। यह हमारी यादों और विचारों का दर्पण है, जिससे मन की गहराइयों को नापा जा सकता है। ऑयल किरण में लिखनेवाले कोई साहित्यकार, कवि या प्रतिष्ठित लेखक नहीं है। इसमें कार्मिकों का तुच्छ प्रयास है।

प्रस्तुत अंक में अनेक रोचक विषय-सामग्री और राजभाषा हिंदी की गतिविधियों से संबंधित विषयों को समाहित किया गया है। आशा करता हूं कि प्रबुद्ध पाठकगण इस अंक से जरुर लाभांवित होंगे और अपने बहुमूल्य सुझाव से अवगत करायेंगे।

मैं सभी लेखकगण, परामर्शदाता और सहयोगीगण को हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिनके अथक समर्थन और विचार-विमर्श से पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका।

हरेकृष्ण बर्मन
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

सलाहकार
श्री प्रशान्त बोरकाकोती, कार्यकारी निदेशक (मा.सं. एवं प्रशा.), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

प्रधान सम्पादक
श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (रा. भा.), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक मंडल
डॉ. रमणजी झा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.), निगमित कार्यालय, नोएडा
डॉ. वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.) पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी
डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

सम्पादन-सहयोगी
श्री दीपक प्रसाद, पर्यवेक्षण सहायक (इजी -IV), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री विजय कुमार गुप्ता, पर्यवेक्षण सहायक (इजी-I) पीजी, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री दिगन्त डेका, वरिष्ठ सहायक - I (हिन्दी अनुवादक), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय
डाकघर : दुलियाजान - 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

ऑयल किरण
वर्ष - 17, अंक - 26

आवरण विषय
ऑयल राजभाषा सम्मेलन 2019

इस अंक में .....

ऑयल राजभाषा सम्मेलन 2019 का संक्षिप्त रिपोर्ट	5
ज़िन्दगी	16
नारी	16
पर्यावरण पर कविता	16
जीवन (जीना सीख लिया)	17
मैं एक आजाद पंछी हूं	17
जनहित में एक खत (मार्च 2020)	18
अरे मानव	19
हम ऑयल हैं!	19
वक्त के साथ सब बदल जाते हैं।	20
घमंडी बारिश	20
बाघजान	21
कोरोना	21
अभियुक्त!	21
लॉकडाउन के दौरान जीवन	22
कोरोना वायरस - मानव सभ्यता के लिए एक अभिशाप	23
खुश रहिए	24
सेंधा नमक - उपकारिता और गुण	25
जीवन जीने की कला - योग	27
आज की शिक्षा और हम	28
दो धारी तलवार	29
सुकून की तलाश और बिंटान द्वीप की यात्रा	30
बाली द्वीप - हर किसी का गंतव्य स्थल	34
ऑयल राजभाषा समाचार	**37-43**

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक सैकिया प्रिंटर्स, दुलियाजान, दूरभाष - 9435038425

प्रशांत बोरकाकोटी

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष व गौरव की बात है कि हमारी छमाही गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' का वर्ष 17, अंक 26 प्रकाशित होने जा रहा है। राजभाषा के विकास में ऐसी पत्रिकाएं सार्थक संवाद स्थापित करती है और राजभाषा के विकास को गति प्रदान करती है।

हमें राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए सृजनात्मक भावना से सोचने की आवश्यकता है। राजभाषा की प्रगति तभी संभव है, जब हम राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ कर समय की मांग के अनुसार इसके कार्यान्वयन में उदारतापूर्ण दृष्टि अपनाए। आज डिजिटल इंडिया का दौर है। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए डिजिटल माध्यम ही एकमात्र सार्थक माध्यम सिद्ध हो सकता है। कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में भी ई-प्रयोग को अधिक बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

मुझे आशा है कि यह अंक भी पूर्व प्रकाशित अंको की भांति सुंदर एवं आकर्षक होगा तथा पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से सभी कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक काम करने की प्रेरणा मिलेगी। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सभी लेखकगण तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयासों के लिए उन्हें बधाई देता हूँ।

'ऑयल किरण' का वर्ष 17, अंक 26 प्रकाशन के लिए पुन: मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रशांत बोरकाकोटी

(प्रशांत बोरकाकोटी)

दिलीप कुमार भूयां

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) एवं
उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारी छमाही गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' का वर्ष 17, अंक 26 प्रकाशित किया जा रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से हिंदीतर भाषी प्रांत से हिंदी में पत्रिका का नियमित प्रकाशन चुनौतीपूर्ण है। उन चुनौतियों को दरकिनार करके इस प्रकार का नियमित प्रकाशन करना निश्चित ही सराहनीय कार्य है। इस कार्य में जुटे सभी लोगों को मेरी शुभकामानाएं।

हमारा संविधान भी हमें अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए हमारे कर्तव्यों की याद दिलाता है। इसी दिशा में ऑयल इंडिया लिमिटेड में भी राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं को एक साथ विभिन्न स्तरों पर क्रियान्वित किया जा रहा है। ऑयल इंडिया लिमिटेड अपने कार्यालय के अतिरिक्त नराकास, दुलियाजान का अध्यक्ष होने के नाते दुलियाजान तथा उसके आस पास स्थित सदस्यों कार्यालयों में भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए बेहतर वातावरण बना रहा है। इन्हीं प्रयासों की वजह से ऑयल को कई बार राजभाषा पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

भाषा संस्कृति का कोष और वाहिका है। भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम ही नहीं अपितु विचारों की जननी के रूप में उनके पात्रों को स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऑयल किरण एक ऐसा मंच है जहां कार्मिकों के साथ-साथ उनके परिवार के सदस्यों को भी अपनी नैसर्गिक प्रतिभा दिखाने का सुअवसर प्रदान करता है।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री राजभाषा कार्यान्वयन को एक नई दिशा देगी तथा हिंदी प्रेमियों को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रेरित करेगी।

दिलीप कुमार भूयां

(दिलीप कुमार भूयां)

ऑयल राजभाषा सम्मेलन 2019 का संक्षिप्त रिपोर्ट

भारत की दूसरी सबसे बड़ी राष्ट्रीय पेट्रोलियम कंपनी ''ऑयल इंडिया लिमिटेड'',अपने कार्य के अतिरिक्त भारत सरकार के निर्देशों का अनुपालन करते हुए राजभाषा हिंदी के विकास व प्रचार-प्रसार में अपना भरपूर योगदान देती आ रही है। कंपनी का मुख्य व्यवसाय पेट्रोलियम पदार्थों का उत्पादन एवं परिवहन से जुड़ा हुआ है। कंपनी अपने मुख्य व्यवसाय के साथ-साथ राजभाषा के लिए भी पूर्णत: प्रतिबद्ध एवं दृढ़ संकल्पित है। कंपनी अपने कार्मिकों के साथ-साथ अपने नराकास, दुलियाजान सदस्य कार्यालयों, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के अधिकार क्षेत्र में स्थित विद्यालयों के विद्यार्थियों आदि को समाहित करते हुए अपनी वार्षिक राजभाषा गतिविधियां संचालित करती है। हिंदी में अपना काम करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए सार्थक कदम उठाते आये हैं। ऑयल इंडिया लिमिटेड राष्ट्र हित में अपना कार्य करने के साथ-साथ भारत सरकार के निर्देशों का अनुपालन करते हुए राजभाषा हिंदी के विकास व प्रचार-प्रसार में भी अपना भरपूर योगदान देती आ रही है। इसी कड़ी में ऑयल के इतिहास में ''ऑयल राजभाषा सम्मेलन 2019'' जैसे कार्यक्रम को क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान से बाहर, वो भी इतने वृहत्त रुप में आयोजन पहली बार किया गया, जो एक मील का पत्थर साबित हुआ है।

हमारी कंपनी ने पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के संयुक्त तत्वावधान में पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के शिलांग परिसर में बड़े धूमधाम के साथ ''ऑयल राजभाषा सम्मेलन 2019'' का आयोजन किया। नेहु में आयोजित दो दिनों के इस कार्यक्रम में दिनांक 18 अक्टूबर, 2019 को उद्घाटन सत्र, प्रथम सत्र, द्वितीय सत्र का आयोजन किया गया और दिनांक 19 अक्टूबर, 2019 को तृतीय सत्र, चतुर्थ सत्र और समापन सत्र का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र

इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. रमणजी झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल, नई दिल्ली ने किया। राष्ट्रगान के पश्चात मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि आदि को मंचासीन हेतु आमंत्रित किया गया। सम्मेलन में मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री तथागत राय ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इसके अतिरिक्त, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के कुलपति (प्रभारी) प्रो. एच लामीन, ऑयल के स्वतंत्र निदेशक श्री गगन जैन, ऑयल के आवासी मुख्य कार्यपालक श्री प्राणजित डेका, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के कुलसचिव डॉ. जे एन नायक विशिष्ट अतिथि के रुप में मंचासीन थे। मंचासीन अतिथियों के अलावा कार्यक्रम में श्री अखिलेन्द्र मिश्रा, (प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता), प्रो. विनोद तिवारी (दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रो. आशीष त्रिपाठी, (काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी), डॉ. पल्लव (दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रो. भरत प्रसाद (पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग), प्रो. डी के चौबे (पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग) एवं ऑयल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ देश के और भी कई गणमान्य व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) एवं श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (जन संपर्क) ने मंचासीन अतिथियों का असमिया संस्कृति के अनुसार असमिया फूलाम गामोछा, शाल एवं पुष्प गुच्छ से सम्मानित किया। तत्पश्चात अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग की छात्राओं द्वारा मां सरस्वती की वंदना के साथ कार्यक्रम शुरु किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ऑयल इंडिया लिमिटेड के कॉरपोरेट गीत, जिसमें कंपनी का संक्षिप्त इतिहास निहित है, से किया गया।

ऑयल इंडिया लिमिटेड का परिचय देते हुए डॉ. झा ने कहा कि हमारी कंपनी कच्चे तेल का उत्पादन करने वाली भारत की दूसरी सबसे बड़ी अपस्ट्रीम कंपनी है। कंपनी का कार्य है कच्चे तेल एवं गैस का अन्वेषण, विकास, उत्पादन तथा परिवहन करना है, साथ ही एलपीजी उत्पादन के व्यवसाय में भी है। ऑयल इंडिया लिमिटेड राजभाषा की गतिविधियों में, मुकामों को प्राप्त भी किया है और आज का यह दो दिवसीय कार्यक्रम भी इसी कड़ी का हिस्सा है। डॉ. झा ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हिंदी देश के सभी भाषा-भाषियों के मध्य भाव, विचारों और अभिव्यक्ति का एक सार्थक माध्यम है। यह भारत की सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है जिसमें उच्चारित होने वाले ध्वनियों को व्यक्त करना सरल है। इसे जिस भाषा में व जिस बोली में बोला जाता है उसी में लिखा भी जाता है।

इसके पश्चात स्वागत भाषण में डॉ. डी. के. चौबे, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, नेहु, शिलांग ने कहा कि यह बड़ा सुखद आश्चर्य है कि ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान द्वारा पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के साथ मिलकर शिलांग परिसर में ''ऑयल राजभाषा सम्मेलन- 2019'' का आयोजन किया है जो हमारे विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने नेहु विश्वविद्यालय और ऑयल इंडिया लिमिटेड की तरफ से समस्त भारत वर्ष के दूर-दराज क्षेत्रों

से पधारे हिंदी के विद्वान व पंडित एवं ऑयल इंडिया लिमिटेड से पधारे निदेशक, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण का भी हार्दिक स्वागत किया।

इसके आगे उद्घाटन भाषण देते हुए श्री प्राणजित डेका, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल ने मंच पर विराजमान आदरणीय मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल, मेघालय, श्री तथागत रॉय, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के कुलपति, डॉ. प्रोफेसर एच. लामीन, नेहु के कुलसचिव, डॉ. जय नारायण नायक, ऑयल इंडिया लिमिटेड के निदेशक मंडल के स्वतंत्र निदेशक श्री गगन जैन, आमंत्रित सभी अतिथियों, ऑयल से पधारे हुए सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण, नराकास, दुलियाजान के सदस्यों कार्यालयों के कार्मिकों, नेहु विश्वविद्यालय के अध्यापकगण तथा देवियों एवं सज्जनों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हमारा देश एक बहुभाषी देश है। भाषा कोई भी हो हमें एक साथ मिलकर रहना सिखाती है। भाषा हमेशा समाज को एकता के सूत्र में बांधे रखता है। हिंदी राष्ट्र एकता एवं

अखंडता के बीच एक कड़ी के रुप में आज लगभग सर्वमान्य है। हमारी कंपनी अपने मुख्य व्यवसाय के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रयोग को भी बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्हेंने कंपनी द्वारा कराये जा रहे असमिया प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं गुवाहाटी विश्वविद्यालय में ऑयल द्वारा संचालित श्रीमंत शंकरदेव फेलोशिप की तरफ आकर्षित करते हुए कहा कि ऑयल इंडिया लिमिटेड को असम साहित्य सभा द्वारा असमिया प्रशिक्षण कार्यक्रम 'निपुण' के लिए भाषा शहीद रंजीत बरपुजारी विशेष सम्मान प्राप्त हुआ है। इसी कड़ी में विश्व हिंदी परिषद एवं पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा भी ऑयल इंडिया लिमिटेड को राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

श्री गगन जैन, स्वतंत्र निदेशक, ऑयल ने अपना वक्तव्य मां भारती के चरणों में सत-सत नमन करते हुए एक गाने के बोल से शुरुआत किया - ''जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा, वह भारत देश है मेरा, वह भारत देश है मेरा''। उन्होंने कहा कि

भाषा और संस्कृति बिलकुल जुड़ी हुई है, उसको अलग करके नहीं देखा जा सकता। उन्होंने कहा कि हिंदी ही दुनियां की एकमात्र ऐसी भाषा है जिस तरह से बोली जाती है उसी तरह से लिखी जाती है। अतएव हिंदी सही मायने में समृद्ध भाषा है।

डॉ. जय नारायण नायक, कुल सचिव, नेहु ने सभी का स्वागत करते हुए अपना संक्षिप्त वक्तव्य रखा। उन्होंने कहा कि नेहु विश्वविद्यालय ने हिंदी में काफी प्रचार-प्रसार का काम किया है और हिंदी,

इंग्लिस, खासी डिक्सनरी एवं हिंदी, गारो, इंग्लिस डिक्सनरी भी तैयार की है। दूसरी तरफ, पूर्वोत्तर की जितनी भाषाएं हैं सभी को मिलाजुला कर डिक्सनरी तैयार किया जा रहा है। भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके बदौलत हम अपने भावों और विचारों को प्रकट कर सकते हैं।

प्रोफेसर एच. लामीन, कुलपति, नेहु, शिलांग ने सभी का स्वागत

करते हुए कहा कि मुझे बहुत खुशी हो रही है कि ऑयल इंडिया लिमिटेड, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के साथ संयुक्त रुप से पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के शिलांग परिसर में ''ऑयल राजभाषा सम्मेलन-2019'' का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए उन्होंने आयोजकों को बहुत धन्यवाद दिया।

अंतर-क्षेत्रीय / अंतर-विभागीय / ऑयल नराकास राजभाषा शील्ड का वितरण

ऑयल इंडिया लिमिटेड में, राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभिन्न कार्यालयों/विभागों को राजभाषा शील्ड प्रदान किया गया। ऑयल इंडिया लिमिटेड के पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी एवं कोलकाता कार्यालय, कोलकाता को संयुक्त रुप से प्रथम अंतर-क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी के प्रतिनिधि श्री अरुणज्योति

बरुवा एवं श्री नारायण शर्मा और कोलकाता कार्यालय, कोलकाता के प्रतिनिधि श्री अंशुमान राय चौधरी एवं डॉ. विजय मोहन बरेजा ने मेघालय के महामहिम राजपाल, मुख्य अतिथि श्री तथागत राय के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण किया।

ऑयल इंडिया लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन करने वाले विभिन्न विभागों में से प्रथम-क्षेत्र संचार विभाग, द्वितीय- अनुसंधान एवं विकास विभाग, तृतीय- रसायन विभाग, प्रोत्साहन- चिकित्सा विभाग एवं सामग्री विभाग को अंतर-विभागीय राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

क्षेत्र संचार विभाग के प्रतिनिधि श्री आर. के. अंतवाल, श्री अनिल गौतम एवं श्री पंकज दत्ता, अनुसंधान एवं विकास विभाग के प्रतिनिधि श्री अंकुरज्योति देव शर्मा एवं श्री अभिषेक गोस्वामी, रसायन विभाग के प्रतिनिधि श्री विष्णु राभा एवं श्री एस रावत, चिकित्सा विभाग के प्रतिनिधि डॉ. नवनीत स्वरगिरी, भूभौतिकी विभाग के प्रतिनिधि श्री प्रदीप सिंह एवं श्री आदित्य क्मार शुक्ला ने मेघालय के महामहिम राजपाल, मुख्य अतिथि श्री तथागत राय के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण किया।

इसके अलावा, सभी विभागों में से प्रशिक्षण हेतु अधिकतम नामांकन करने के लिए एलपीजी विभाग व सामग्री विभाग को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया।

एलपीजी विभाग के प्रतिनिधि श्रीमती नवनीता डेका एवं श्री यादव उपाध्याय और सामग्री विभाग के प्रतिनिधि श्री गौतम कुमार राय एवं श्री आयुष सौमानी ने मेघालय के महामहिम राजपाल, मुख्य अतिथि श्री तथागत राय के करकमलों से विशेष पुरस्कार ग्रहण किया।

उसी कड़ी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों में भी राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों को ऑयल नराकास राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

प्रथम पुरस्कार विजेता सदस्य कार्यालय एजीबीपी, निपको के प्रतिनिधि श्री रंजीत बरठाकुर व श्री अरुण प्रधान, द्वितीय पुरस्कार विजेता सदस्य कार्यालय केंद्रीय विद्यालय, दुलियाजान के प्रतिनिधि

श्री राजीव दास व श्री उमाशंकर पांडे, तृतीय पुरस्कार विजेता सदस्य कार्यालय ब्रह्मपुत्र वैली फर्टिलाइजर लिमिटेड के प्रतिनिधि संजय श्री महेश्वरी व श्रीमती प्रिया जोशी नामरुप ने मेघालय के महामहिम राजपाल, मुख्य अतिथि श्री तथागत राय के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण किया।

पत्रिका का लोकार्पण

मेघालय के महामहिम राज्यपाल, मुख्य अतिथि श्री तथागत राय ने ऑयल इंडिया लिमिटेड की हिंदी पत्रिका ''ऑयल किरण'' एवं पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय की पत्रिका ''नेहु ज्योति'' का विमोचन किया।

इसके साथ ही, ऑयल इंडिया लिमिटेड के आवासी मुख्य कार्यपालक श्री प्राणजित डेका द्वारा मुख्य अतिथि श्री तथागत राय एवं मंचासीन अतिथियों को ऑयल कॉफीटेबल बुक का वितरण किया गया।

मेघालय के महामहिम राज्यपाल, मुख्य अतिथि श्री तथागत राय का आशीर्वचन: श्री तथागत राय ने मंचासीन सभी अतिथियों, उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों, सज्जनों, देवियों एवं बच्चों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भारत बहुभाषी देश होने के कारण, कोई

भी एक ऐसी भाषा होनी चाहिए जिसके तहत हम एक दूसरे से, दूसरे भाषा-भाषी लोगों से बातचीत कर सकें। हिंदी ही वह भाषा हो सकती है और दूसरा कोई भाषा नहीं हो सकती है। हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार जो हुआ है उसमें सरकारी साधनों जैसे ऑल इंडिया रेडीओ या दूरदर्शन का बड़ा योगदान है। उन्होंने हिंदी की शुद्धता पर ज्यादा ध्यान नहीं देने का आग्रह किया है। भाषा के अनेक मानदंड हैं। भाषा बदलता है और बदलता रहेगा। लोगों में गलतफहमी फैली हुइ है कि हिंदी राष्ट्र भाषा है। हिंदी मगर राष्ट्र भाषा नहीं है। हमारे संविधान के आठवें सेड्यूल में जितनी सारी भाषाएं हैं, वे सभी राष्ट्र भाषा है। इसमें हिंदी राजभाषा है। भाषा तो बिलकुल अपना महत्व लेकर चलती है और हिंदी भाषा का महत्व यह है कि ये सारे भारत में समझी जाती है। उन्होंने उपस्थित सभी से आग्रह किया है कि हिंदी भाषा से प्यार करना चाहिए। इससे हिंदी भाषा आगे बढ़ेगी, आगे आएगी और यही हमारी अपेक्षा है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड के आवासी मुख्य कार्यपलक श्री प्राणजित डेका जी ने श्री तथागत राय, मुख्य अतिथि, महामहिम राज्यपाल, मेघालय को ऑयल की ओर से एक स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

प्रोफेसर भरत प्रसाद, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, नेहु द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया एवं राष्ट्र गान के पश्चात उद्घाटन सत्र की समाप्ति की घोषणा की गई।

प्रथम सत्र:राजभाषा: गतिरोध, प्रतिरोध एवं संभावना

पंजीकरण के पश्चात प्रो. अवधेश कुमार मिश्र, पूर्व निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा बीज व्याख्यान, अध्यक्षता डॉ. आशीष त्रिपाठी, प्रो. काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी और संचालन श्री राजेन्द्र कुमार राम, हिंदी अधिकारी, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग किया गया।

अवधेश कुमार मिश्र जीने कहा कि भारत के संविधान में विभिन्न कारणों से हिंदी को जगह दी गई है। हिंदी को राजभाषा के रुप में अपनाया और साथ ही अंग्रेजी को भी हिंदी के साथ रखा गया। राजभाषा हिंदी को अन्य भाषाओं से परहेज नहीं है। संविधान में कहा गया कि अन्य भाषाओं से शैली, वाक्य और प्रचलित शब्द, या वाक्यगत संरचना एक जैसी हो तो उसको हिंदी में लिया जा सकता है। हिंदी के विकास को लेकर कहा कि कार्यालय में हिंदी भाषा का प्रयुक्त होना चाहिए। इसके लिए आवश्यक प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

डॉ. आशीष त्रिपाठी ने कहा कि जिस भाषा में हम अनुकूलित होते हैं या तैयार होते हैं वह भाषा दूसरी होती है और अपने कार्यालय में जब जाते हैं तो हमें एक दूसरी तरह की भाषा से सामना करना पड़ता है, उसे बोलनी और लिखनी पड़ती है। अपने विचार रखते हुए उन्होंने कहा कि जब हम कहते हैं कि हिंदी को राजभाषा बनाएंगे और सभी को पढ़ना अनिवार्य होगा तो देश के कुछ हिस्सों से विरोध में आवाज उठती है। इस समस्या का जड़ तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, पॉन्डीचैरी में नहीं है, बल्कि बड़ी समस्या तो दिल्ली में है। समस्या का जड़ औपनिवेशियुग है जो भारत में हैं, समस्या की जड़ वहां है। इस देश के वे ताकतवर लोग औपनिवेशिक युग में हासिल कर ली थी। इस ताकत के पीछे अंग्रेजी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। ताकत का एक जरिया अंग्रेजी भाषा भी थी।

श्री अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), यूको बैंक, गुवाहाटी ने कहा कि राजभाषा हिंदी भारत के संविधान में अनुच्छेद 343 में अंतरनीहित है। संविधान निर्माण का कार्य 1946 में शुरु हुआ और 1949 के 26 नवंबर को यह कार्य संपन्न हो गया और 14 सितंबर,1949 को हिंदी की स्थापना की गई। हिंदी के पक्ष में क्रम विकसित होती विचार धारा सामने आ रही थी जिसको स्थापित करने वालों में हिंदी भाषा-भाषी से ज्यादा हिंदीतर भाषा-भाषी थे और हिंदी को राजभाषा बनाने हेतु संविधान ने स्वीकार किया।

डॉ. विजय मोहन बरेजा, उप महाप्रबंधक(राजभाषा), कोलकाता ने कहा कि अपनी भाषा का विकास देखना चाहते हैं तो उसके गतिरोध को दूर करना होगा। चाहे गतिरोध सरकार के नियमों से हो यह किसी के प्रयासों की तरफ से हो। मानसिक गतिरोध है, मानसिक अवरोध है, इसके चलते आज जिस स्तर पर हम भाषा को देखना चाहते थे, इतने वर्षों के पश्चात भी उस स्तर तक हमारी भाषा पहुंच नहीं पाई है। श्री बरेजा ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से ऑयल की गतिविधियों/उपलब्धियों को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा के विकास के लिए हमारी कंपनी सदैव प्रयासरत रहती है। कंपनी की अपनी वेबसाइट बनी हुई है जिसमें राजभाषा पोर्टल भी है और उसको हमलोगों ने द्विभाषी बना लिया है। उस पर त्रिभाषी रुप में कुछेक शब्द जिसे ''आज का शब्द'' कहते हैं, प्रतिदिन अपलोड किया जाता है, जिसे विभिन्न कार्यालय प्रतिदिन अपने यहां के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करते हैं। इसके अलावा कार्यशाला, राजभाषा नियम का पूर्ण अनुपालन, दस्तावेजों का अनुवाद, तिमाही प्रगति रिपोर्ट का प्रेषण, प्रेस विज्ञप्ति का द्विभाषी या त्रिभाषी प्रकाशन, हिंदी पखवाड़ा/माह का आयोजन, हास्य कवि सम्मेलन, नराकास, दुलियाजान की अध्यक्षता व अनुपालन, हिंदी पुस्तकालय पर कार्य किया जाता है। हिंदीतर भाषी के लिए हिंदी प्रशिक्षण और हिंदी भाषी कार्मिकों के लिए क्षेत्रिय भाषा असमिया का भी प्रशिक्षण चलाया जाता है ताकि वे इतनी भाषा सीख सके कि स्थानीय कार्मिकों के साथ कार्य करने में कोई असुविधा न हो जिसके लिए गुवाहाटी में असम साहित्य सभा की तरफ से ऑयल, दुलियाजान को भाषा शहीद रंजीत बरपूजारी विशेष सम्मान से पुरस्कृत भी किया है। हिंदी और असमिया प्रशिक्षण में उत्तीर्ण कार्मिकों को प्रोत्साहन योजना के तहत पुरस्कृत किया जाता है।

गृह पत्रिका ऑयल न्यूज त्रिभाषी रुप में अर्थात असमिया, हिंदी व अंग्रेजी और गृह पत्रिका ऑयल किरण मूलत: केवल हिंदी भाषा में प्रकाशित की जाती है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए ऑयल द्वारा अंतर-विभागीय राजभाषा शील्ड, अंतर-क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड, नराकास, दुलियाजान के अंतर्गत ऑयल नराकास राजभाषा शील्ड का वितरण किया जाता है। भारत सरकार राजभाषा विभाग के निदेशानुसार नराकास, दुलियाजान की आधिकारिक वेबसाइट का निर्माण भी हम लोगों ने किया है। इसके अलावा, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान की सूचना प्रबंधन प्रणाली भी है, जिसमें प्रत्येक बैठक के पश्चात निर्धारित समय पर अपडेट किया जाता है। राजभाषा के श्रेष्ट कार्यनिष्पादन के लिए हमें कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। हिंदी एवं असमिया साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के लिए गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी में श्रीमंत शंकरदेव फेलोशिप की स्थापना की गई, इसके अंतर्गत यूजीसी के मानदंडो के हिसाब से हम फेलो को चुनते हैं और उन्हें फिर अपनी तरफ से फेलोशिप प्रदान करते हैं ताकि हिंदी और असमिया के तुलनात्मक अध्ययन में आगे आए। ऑयल कॉरपोरेट गीत हिंदी में है। असमिया साहित्य के स्थानीय प्रसिद्ध कहानीकार डॉ नगेन सैकिया के कहानी संग्रह का हिंदी में अनुवाद करवा लिया गया है। ऑयल द्वारा कॉफीटेबल बुक को हिंदी व अंग्रेजी में प्रकाशित किया गया। सीएसआर के तहत कई प्रोमो विडियो को भी द्विभाषी/त्रिभाषी बनाया गया है।

द्वितीय सत्र: जन संचार माध्यम एवं हिंदी

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. भरत प्रसाद, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग और संचालन डॉ. आदित्य विक्रम सिंह, अतिथि प्रवक्ता, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग ने किया।

डॉ. फिल्मेका मार्बिनियांग, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, संत एंथनी कॉलेज, शिलांग ने कहा कि मेघालय में 3 मातृभाषाएं बोली जाती हैं- खासी, जयंतीया और गारो। लेकिन वे आपस में वार्तालाप के लिए हिंदी भाषा को ही अपनाते हैं, चाहे वो टूटी-फूटी ही क्यों न हो। राजभाषा हिंदी का प्रयोग मेघालय में करना बहुत कठिन हैं क्योंकि खासी भाषा रोमन में लिखी जाती है। हिंदी के संदर्भ में देवनागरी लिपि, शब्दावली, वाक्य बनाना, लिंग भेद समझना, विभक्ति चिह्नों का प्रयोग आदि कई कठिनाइयां हैं। यहां हिंदी के विकास के लिए कार्यालयों में कर्मचारियों को हिंदी के प्रशिक्षण दिए जाते हैं, पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। यहां विभिन्न प्रकार के शब्दकोश बन रहे हैं। शिलांग एक पर्यटन स्थल होने के कारण व्यवसाय को लेकर हिंदी में रुची बढ़ रही है।

श्री अजय आनंद, संम्पादक, ब्लू बक पब्लिकेशन, नई दिल्ली ने कहा कि हमें आधुनिक तकनीक को अपनाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में इसकी अहम भूमिका है। भाषा में अपनी संस्कार प्रवाह से चलती है। हमलोग स्क्रीन एडीक्ट हो चुके हैं। इसकी संभावना यह है कि इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लिपि की अब उतनी बड़ी समस्या नहीं है। गुगल पर लिपि के तमाम टुल्स उपलब्ध हैं, वो भी सारे फ्री हैं। तकनीक ने हमारा काम और आसान कर दिया है। उन्हें तकनीकी रुप से सक्षम बनाने की जरुरत है।

डॉ. कुमार विमलेन्दु सिंह, संपादक, रत्ना सागर प्राइवेट लिमिटेड ने अपने भाषण में कहा कि भाषा कोई भी चुनिए, शब्दों का प्रयोग कीजिए लेकिन इसका ख्याल रखिए कि वो प्रदुषण के स्तर तक न गिरे। कला के लिए कला को नग्नता के रुप में प्रस्तुत करना स्वीकार्य नहीं है। नग्नता फिर भी कला हो सकती है, लेकिन कला नग्नता नहीं। सब कुछ हमी हैं, सब कुछ हमी पर है। कला में गिरावट मत लाइये, साहित्यिकता बेशक बरकरार रखिए।

श्री अखिलेन्द्र मिश्रा, प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता ने सभी का अभिवादन किया और कहा कि मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा है कि ऐसा दृश्य और वह भी उत्तर-पूर्व में, वह भी हिंदी सम्मेलन के लिए, हो ही नहीं सकता। उन्होंने ऑयल इंडिया को और पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के साथ मिलकर इतना बड़ा सम्मेलन का आयोजन करने के लिए धन्यवाद दिया, वास्तव में यह काबिले तारीफ है। अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि चलिए थोड़ा जड़ में पानी डालते हैं। पत्तों में तो पानी सभी डाला करते हैं। आज कल पत्तों में ही पानी डाल रहे हैं, चाहे बात हिंदी की ही क्यों न हो। चाहे संविधान में अनुच्छेद 343 से लेकर 351 तक सिर्फ हिंदी भाषा की ही चर्चा है और किसी को कुछ पता नहीं। अनुच्छेद 351 में स्पष्ट रुप से लिखा हुआ है कि सरकार अपनी पूरी

शक्ति के साथ हिंदी को समृद्ध बनाने के लिए सारा प्रयास करेगी। जब 14 सितंबर,1949 में हिंदी को राजभाषा बनाया गया तो कहा गया कि अंग्रेजी भी साथ रहेगी। 15 साल के बाद 1963 में संसद में पास हुआ कि जब तक सदन नहीं चाहेगी तब तक अंग्रेजी ही राजभाषा रहेगी। 56 साल बाद फिर से विरोध हुआ, लेकिन इस बार अंग्रेजी का विरोध में नहीं, बल्कि हिंदी के विरोध में हुआ। संसोधन में कहा गया कि जब तक केंद्र सरकार यह कानून न बना दे कि अब हम अंग्रेजी को राजभाषा के रुप में नहीं स्वीकारेंगे, राजभाषा के रुप में अंग्रेजी में कामकाज नहीं होगा, तब तक अंग्रेजी में ही काम-काज होता रहेगा और कारण बताया गया कि कुछ ऐसे प्रदेश हैं जो मानने के लिए तैयार नहीं हैं कि हिंदी हमारी भाषा है या हिंदी राजभाषा है। हमारी भाषा हिंदी तो राजभाषा है, राष्ट्रभाषा क्यों नहीं है, क्योंकि हमारे संविधान में राष्ट्र शब्द की कोई चर्चा ही नहीं है। हिंदी संस्कृत की बेटी है। कहते हैं मां का सारा गुण बेटी में आ जाता है। संस्कृत के बहुत सारे ऐसे गुण हैं जो हमारी भाषा हिंदी में है।

प्रोफेसर भरत प्रसाद ने कहा कि पूरे पूर्वोत्तर में जितनी जनजाति भाषाएं हैं उसमें लिपि की समस्याएं वास्तव में एक गंभीर समस्या है। केवल असम की अपनी लिपि है। लेकिन अन्य राज्यों के जनजाति भाषाओं की लिपि रोमन है। हिंदी अपनी विकास की ओर आगे बढ़ रही है। हमारे लिए पूर्वोत्तर की सभी भाषाएं कम महत्वपूर्ण नहीं है। बल्कि हम उसको हिंदी के समतुल्य सुरक्षा हेतु प्रयासरत हैं।

तृतीय सत्र: हिंदी का बदलता परिदृश्य

तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. विनोद तिवारी, प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और संचालन श्री आलोक सिंह, शोधार्थी, नेहू, शिलांग ने किया।

डॉ. पल्लव, सहायक प्रोफेसर, हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि भाषा के क्षेत्र में बदलाव को दो तरह से देख सकते हैं सकारात्मक और नकारात्मक। सबको भाषा की जरुरत होती है। बाजार को भी भाषा की जरुरत होती है। भाषा सबसे बड़ा काम करती है विचारों का सम्मान, विचारों का पालन-पोषण या वैचारिक प्रक्रिया बिना भाषा का विकास संभव नहीं है।

डॉ. आशीष त्रिपाठी, प्रोफेसर, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने कहा कि आज का विषय का अर्थ है बदलते परिदृश्य में हिंदी, हम सब उस परिदृश्य के भीतर हैं जिसमें हिंदी बदल रही है। सिर्फ हिंदी नहीं बदल रही है बल्कि हिंदी बोलने वाले लोग बदल रहे हैं। वह समाज बदल रहा जो हिंदी के पीछे मौजूद है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो इसके नागरिकों के लिए सहज और स्वाभाविक नहीं रही है। हमारे लिए हमारी मातृभाषा, मातृ बोलियां जैसे भोजपुरी, मगधी, अंगीका, हड़ोती, धुमधारी, मारवाड़ी, मेवाड़ी, बखेली, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, मालवी, कुमायनी, गढ़वाली, अवधि, ब्रज भाषाएं हमारे लिए ज्यादा सहज हैं। हम पहले इन बोलियों और भाषाओं के नागरिक हैं न कि मानक हिंदी, खड़ी बोली हिंदी या राजभाषा हिंदी के। हिंदी असल में भाषाओं का और बोलियों का एक परिवार है। बदलते परिवेश में हिंदी की बात करने पर उन बोलियों के बारे में सोचना अपेक्षित है, क्योंकि ये बोलियां ही हिंदी के निर्माण का आधार हैं। 1991 के बाद भूमंडलीकरण की भाषा बनी तो हिंदी में परिवर्तन हुआ। हिंदी में कई सारे सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। सबसे बड़ी समस्या है उपनिवेशवाद के तथ्य जो हमारे भीतर बचे रह गए हैं। गांव-गांव में पब्लिक स्कूल खुले हैं। हमारी अगली पीढ़ीयां जो पब्लिक स्कूलों में पढ़ कर आ रही हैं, जो जाने अंजाने खास तरह की नवउपनिवेशवादी प्रक्रियाओं का शिकार हो रही है, उन्हें आप बहुत दिन तक रोके नहीं रख पाएंगे।

डॉ. विनोद तिवारी, प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि दुनिया में कई भाषाएं हैं, बोलियां हैं। उन्होंने भाषा के जीवित रहने, उसके वर्चस्व, विलुप्तीकरण पर प्रकाश डाला। अपने ही देश में 300 से अधिक भाषाएं हैं, जिनको तरह-तरह की बोलियां कही जाती हैं। उसमें से बहुत सारी भाषाएं लुप्त होती चली गई। उन्होंने 6 तरह की हिंदी की संरचना के बारे में बाताया। पहला, कार्यालयी हिंदी जिसको राजभाषा कहा जाता

है। दूसरी, बोलचाल की हिंदी या संपर्क हिंदी या संपर्क भाषा कहते हैं। तीसरी, व्यवसाय, बाजार, मनोरंजन, विज्ञान, फिल्म उद्योग, दूरदर्शन आदि की हिंदी हैं। चौथी, हिंदी अध्यापक की हिंदी जिससे पढ़ते और शोध कराते हैं। पांचवी, हिंदी रचना शीलतावादी हिंदी कहते हैं। छठवीं, अनुवाद वाली हिंदी कहते हैं। उन्होंने कहा कि भाषा का समृद्ध होना दो-तीन जगहों पर निर्भर करेगी न्यायपालिका की भाषा, शासन प्रशासन की भाषा और स्वास्थ क्षेत्र में डॉक्टर की भाषा। यह सरकारी नीति का मसला है।

चतुर्थ सत्र: कार्यालयीन कार्य एवं सरल हिंदी

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. डी के चौबे, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग और संचालन श्री हरेकृष्ण बर्मन, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), राजस्थान परियोजना, ऑयल ने किया।

श्री बर्मन ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आज का विषय आपसे और राजभाषा से संबंधित है। मेरा स्पष्ट रुप से कहना है कि हिंदी में काम करना है तो व्याकरण को भूलना होगा। बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना होगा। यदि आप हिंदी नहीं जानते या कम जानते हैं तो व्याकरण पर ध्यान न दें और बोलचाल की भाषा के शब्दों का प्रयोग करें, तभी कार्यालय का काम आगे बढ़ेगा। भारत सरकार की ओर से वार्षिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है और उसमें हमलोगों के लिए लक्ष्य निर्धारित है। अगर व्याकरण के पीछे भागेंगे तो सरकार का जो लक्ष्य है उस लक्ष्य को कभी हासिल नहीं कर पाएंगे।

डॉ. विशाल विक्रम सिंह, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय ने कहा कि भाषा का संबंध अपने-अपने समाजों से है। जैसा समाज हम बनाते हैं वैसी ही भाषा पैदा होती है। ठंडा मतलब कोकोकोला पर कहा कि इससे कोई दिक्कत नहीं है, एक तरह का रचनात्मकता है, लेकिन ये ठंडे होने का अर्थ जो सिर्फ कोकोकोला में सिमट गया, यह संकट है, इसको बचाना पड़ेगा। भाषा को सरल करने के लिए जो कार्यालय सोचते हैं, वो सही है। सरलता का मतलब यह नहीं कि आप मनमानी रुप से लिखें, बात करें। वहां की जनता को समझ में आए। मेरे ख्याल से सरलता का अर्थ यही है। इसलिए हममें से अधिकांश लोग अपने-अपने समाजों से, अपने-अपने परिवारों से जुड़े हुए हैं, हम कोशिश करें कि जो संवैधानिक परिवर्तन है वह सरकार करेगी लेकिन अपने-अपने कार्यालयों में, अपनी-अपनी ईकाइयों में, अपनी-अपनी भूमिकाओं में हम कठिन से कठिन चीजों को सामान्य तरीके से समझा सके।

डॉ. डी के चौबे, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, नेहु ने अध्यक्षता करते हुए अपने विचार संक्षिप्त में रखा। उन्होंने हिन्दी के विकास पर कहा कि शिलांग 'ग' क्षेत्र में है। यहां के अधिकतर कर्मचारी हिंदीतर भाषी खासी, बंगला, असमिया हैं। शब्दावली के गठन पर जोर देते हुए कहा कि जहां तक संभव हो हर भाषाओं से कम से कम दो-चार शब्द लिए जाएं। इससे हमारे शब्दावलियों में बढ़ोत्तरी होगी। उस शब्दावली में हर भाषा से शब्द ली जाए ताकि वहां के लोग महसूस करे कि हमारी शब्दावली भी राजभाषा के प्रयोग में लाई जा रही है। राजभाषा हिंदी के लिए हमें अभ्यास की सख्त आवश्यकता है। अभ्यास से कोई भी काम आसान हो जाता है।

पंचम सत्र-हिंदी एवं हिंदी प्रशिक्षण

पंचम सत्र की अध्यक्षता डॉ. पल्लव, सहायक प्रोफेसर, हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और संचालन श्री नारायण शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा), पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी, ऑयल ने किया।

श्री नारायण शर्मा ने सत्र का संचालन किया। उन्होंने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर,1949 को दिया गया और तब से हम राजभाषा हिंदी हमारे मुल्क में और सरकारी कामकाज की भाषा के रुप में प्रयोग में ला रहे हैं और उसमें कितनी सफलता हम हासिल कर रहे हैं वह विचार करने की बात है। उस पर आत्ममंथन और आत्मचिंतन की भी जरुरत है। उन्होंने कहा कि आप बेसक भाषा सीखें, फ्रेंच सीखें, जर्मनी सीखें, रुसी सीखें, लेकिन अपनी मातृभाषा और अपनी भाषा की कीमत पर नहीं। लेकिन हमारे यहां, मैं राजभाषा के संदर्भ में बोल रहा हूं, जन भाषा के रुप में तो हिंदी को किसी के सहानुभूति की जरुरत नहीं है, वह जन भाषा के रुप में स्थापित है।

श्री केवल कृष्ण, भाषा प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ, नई दिल्ली ने कहा कि यूनिकोड/एनकोडिंग, तिमाही प्रगति रिपोर्ट एवं उसका सर्टीफिकेट, नराकास सूचना प्रणाली और अन्य कितनों का कम्प्यूटराइजेसन एंड कार्यान्वयन करने में उन्होंने एवं उनके सहयोगी दलों ने कार्य किया है। आज मैं वेबसाइट डेवेलेप्मेंट,

एप्लीकेसन डेवेलेप्मेंट सभी में सपोर्ट देता हूं। उन्होंने आज स्लाइड प्रस्तुतीकरण के माध्यम से कैसे आधुनिक तकनीक के सहयोग से राजभाषा हिंदी के विकास में उसका प्रयोग कर सकते हैं जैसे हिंदी टाइपिंग विकल्प, व्यॉस टाइपिंग, मशीन अनुवाद, कंठस्थ ट्रांसलेसन मेमोरी, हिंदी प्रबोध प्रवीण प्राज्ञ प्रशिक्षण, अनुवाद प्रशिक्षण, ऑनलाइन शब्दकोश, हिंदी स्कैनर, ई महाशब्द कोश, गुगल डॉक्स कार्यप्रणाली, ई-सरल हिंदी वाक्यकोश साइट पर चर्चा किया और जानकारी दी।

डॉ. पल्लव, सहायक प्रोफेसर, हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने कहा कि हाथ से लिखे हुए दस्तावेज को वर्ड में कनवर्ट करने वाले यंत्र बहुत क्रांतिकारी और उपयोगी टूल है जिसका लाभ हमसब को लेना चाहिए। मेरा विश्वास है कि अगर हम इन सब चीजों के साथ अपने आप को अपडेट करते रहें, तो तमाम तरह के कामों को सुगमता से कर सकेंगे।

शोधार्थी श्री कितीपोंग बुनखंल्ड साहब थायलैंड वासी, शोधार्थी श्री कृष्ण साह, शिलांग, शोधार्थी श्री रमन प्रसाद, शिलांग, शोधार्थी श्री सुनील कुमार, शिलांग ने अपने-अपने शोध के विषय पर संक्षिप्त में प्रकाश डाला।

समापन सत्र

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल ने की। इसके अतिरिक्त उक्त सत्र में श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी), ऑयल भी मंचासीन थे। डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, ऑयल ने समापन सत्र का संचालन किया। समापन सत्र के दौरान ऑयल राजभाषा सम्मेलन में देश भर से आए हुए विद्वानों को एरी शाल एवं स्मृति चिह्न स्वरूप असमिया शराई प्रदान किया गया।

श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी), ऑयल ने कहा कि मैं आसाम का रहने वाला हूं, अहिंदी भाषी हूं। हिंदी से मेरा परिचय तब हुआ, जब पता चला कि मैं एक्क्वेली में पानी पी ही नहीं रहा था क्योंकि आसाम में तो हम

पानी को खाते हैं, हम उस प्रांत से हैं। हमें आएगा, खाएगा, जाएगा वाली हिंदी आती थी, काम हो जाता था। वैसे मातृभाषा के बिना हम रह नहीं सकते, उसे कोई हटा नहीं सकता। वह हमारे रुह में बसा हुआ है। जब देश प्रेम की बात आती है तब हमें एक भाषा चुनना ही पड़ता है जिससे हम भारत में कहीं भी जाएं तो बातों को समझ सकें, हम बात कर सकें। भाषाओं को लेकर कई विरोध हुए। लेकिन यह ध्रुव सत्य है कि भारत में इस वक्त एक ही भाषा हमें जोड़ सकती है और वह है हिंदी। उसका कोई विकल्प नहीं है। इस पर बहस खतम करने का वक्त आ गया है। इसके साथ ही प्रांतीय भाषाओं को भी बचाना होगा। हिंदी भाषा के लिए विद्वानों का मत है कि व्याकरण सरल व सहज हो तो लोगों की रुची इसमें बढ़ेगी। आज की नई टेक्नॉलाजी की सहायता से हिंदी ही नहीं, किसी भी भाषा को आप आसानी से सीख सकते हैं। हम सभी का उत्तरदायित्व है कि भाषा को बचा कर रखें।

श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल ने कहा कि मेरी भाषा खाता है, जाता है से शुरु होता है। जन संपर्क विभाग में कार्यरत हूं और वहीं मेरा ऑफिसियल लैंग्वेज इम्पलीमेंटेसन से परिचय हुआ। हमारे अन्य कार्यालय पाइपलाइन

गुवाहाटी, कोलकाता, दिल्ली और राजस्थान से भी हिंदी अधिकारी यहां आए हैं। ऑयल इंडिया लिमिटेड, भारत सरकार की पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अधीनस्थ एक अग्रणी नवरत्न

कंपनी है। ऑयल इंडिया लिमिटेड अपने कार्मिकों एवं नराकास, दुलियाजान के सदस्यों की भाषा साहित्य, कला एवं संस्कृति के प्रति रुझान पैदा करने के लिए एवं राजभाषा के कार्यान्वयन कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। मैंने कभी हिंदी पढ़ा नहीं है, लेकिन अभी सीख रहा हूं। ऑयल इंडिया लिमिटेड ने हिंदी भाषा के लिए काफी काम किया है। यह कार्यक्रम क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान एवं पूर्वोत्तर विश्वविद्यालय शिलांग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ, जो महत्वपूर्ण है। इस सहयोगिता में विशेषता यह है कि इस तरह का आयोजन किसी विश्वविद्यालय के साथ मिलकर पहली बार किया गया है। हमलोग हर साल ऑयल राजभाषा सम्मेलन करते रहते हैं और यह आयोजन सब से हट कर है। इससे हमलोगों को बहुत फायदा होगा। मुझे उम्मीद है कि इस सम्मेलन से आने वाले दिनों में प्रतिभागियों, कार्मिकों को कार्यालय के कामकाज को करने में सहायता प्राप्त होगा।

धन्यवाद ज्ञापन: डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, ऑयल ने कहा कि मैं नेहु विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय, कुल सचिव महोदय, हमारे हिंदी विभाग के प्रोफेसर डी के चौबे सर, भरत सर, पांडे सर और मिश्रा सर और खास हमारे हिंदी प्रकोष्ट के विशेषज्ञ श्री राजेन्द्र राम जी और नेहु विश्विद्यालय के विद्यार्थी और शोध छात्र के रुप में कार्यरत आदित्य विक्रम सिंह और आलोक इन सब को मैं विशेष रुप से धन्यवाद देना चाहता हूं। फोटोग्राफर और खाना खिलाने वाले कार्मिकों को विशेष तौर पर धन्यवाद देना चाहता हूं। हमारे इस हॉल के कर्मचारी जिसने ध्वनि व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, लाइटिंग व्यवस्था सारा कुछ किया और जिन्होंने साफ सफाई का ध्यान रखा उन सबको अपनी तरफ से और ऑयल इंडिया लिमिटेड के पूरे परिवार की तरफ से धन्यवाद देना चाहता हूं।

औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन: श्री राजेन्द्र राम जी, हिंदी अधिकारी, नेहु, शिलांग ने ऑयल के अधिकारीगण, विश्वविद्यालय के अध्यापकगण, भारत के अन्य स्थानों से आए हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण और विश्वविद्यालय के विद्यार्थीगण यह हमारे लिए खुशी की बात है कि इस प्रकार का आयोजन करने में हम सफल हुए हैं। जो लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से इस कार्यक्रम के संचालन में सहयोगी हैं, उस सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं।

समापन की घोषणा: श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल ने कार्यक्रम समापन की घोषणा की।

ज़िन्दगी

✍ **आयुष सोमानी**
प्रबंधक (सामग्री)
सामग्री विभाग, दुलियाजान

ज़िन्दगी के भी न जाने हैं आखिर कितने रूप और रंग;
किसी के लिए फूलों की सेज तो किसी के लिए मैदान-ए-जंग।
कितने ही बन जाते यहाँ पर राजा और कितने ही बन जाते रंक;
कोई किसी की ज़िन्दगी का है मसीहा तो कोई बन जाता है कलंक।
न जाने कितने लोगों का दीदार कराती है ज़िन्दगी;
किसी को दोस्त और किसी को दुश्मन दे जाती है ज़िन्दगी।
किसी के लिए मेहनत और लगन का नाम है ज़िन्दगी;
तो कोई सोचता है मौज-मस्ती और ऐय्याशी को ज़िन्दगी।
यूं तो सबका ज़िन्दगी जीने का अलग और अनूठा होता है अंदाज़;
पर दूसरों की भलाई सोचने-करने वाले होते हैं असल जिन्दगीबाज़।
ज़िन्दगी का असल मतलब समझना है बड़ा ही मुश्किल;
जिसने समझ लिया वही होता है असल में तारीफ़ के काबिल।
जिस दिन अपने जीने का मकसद समझने लगेगा इंसान;
उसी दिन जीत लेगा वो ज़िंदगी नामक सबसे बड़ा इम्तेहान। ❑

पर्यावरण पर कविता

✍ **एस एम शर्मा**
प्रशासन विभाग, राजस्थान

हे मानव तूने क्या कर डाला,
काट दिये तूने जंगल सारे, बना दिया नदियों को नाला।
बांट दी तूने धरती सारी, सीमाओं में इसको ढाला।
ना छोड़ा आकाश भी तूने, उसका भी बन गया रखवाला।
नष्ट कर दिया उस प्रकृति को, जिसने तुझको पोषा पाला।
अंधाधुंध विकास की धुन में, तूने सबका विनाश कर डाला।
इतनी उपजाऊ इस धरती को, तूने बंजर कर डाला।
अब भी अगर ना चेता तो, समय आयेगा महा विकराला।
हे मानव तूने क्या कर डाला, हे मानव तूने क्या कर डाला। ❑

नारी

✍ **रीबा कुमार**
महाप्रबंधक (संविदा)
संविदा विभाग, दुलियाजान

तुम जल कण हो
या रज कण हो
तुम व्यर्थ नहीं,
तुम अर्थ हो
तुझमें शक्ति किले बनाने की
तुझमें शक्ति जीवन लाने की
किसी बादल का जीवन तुम
किसी तरुवर का संबल तुम
सब में ही तुम समर्थ हो
तुम व्यर्थ नहीं
तुम अर्थ हो
तुम अम्बर का इन्द्रधनुष
तुम धरा की स्वर्णिम पुष्प
तुम साँवरी, तुम बावरी
तुम उषा, तुम विभावरी
हर रंग में तुम अभिव्यक्त हो
तुम व्यर्थ नहीं
तुम अर्थ हो
भले ही तुम सूरज नहीं
पर दीप हो अपने आँगन की
तुझसे उजियारे कई जीवन
उजाला हो अपने स्वप्नों की
सबसे सुन्दर रचना 'ईश' की
तुम सभी गुणों में व्यक्त हो
तुम जल कण हो
या रज कण हो
तुम व्यर्थ नहीं
तुम अर्थ हो ❑

जीवन (जीना सीख लिया)

✍ **पिंकी कुमारी प्रसाद**
क्रय विभाग, कोलकाता शाखा

इस बुरे दौर में भी,
सबने संभलकर चलना सीख लिया।
मौसम की तरह अपने को बदलना सीख लिया।
इस बुरे दौर में भी,
सबने रहना सीख लिया।
मोम की तरह खुद को गलाना सीख लिया।
इस बुरे दौर में भी सबने रहना सीख लिया।
जिन्दगी के लिए सबसे दूर रहना सीख लिया ।
पथ पर चलते-चलते उसे भी नापना सीख लिया।
इस बुरे दौर में भी, सबने रहना सीख लिया।
गुरूर था सभी को, अपनी आधुनिकता पर।
पर वक्त ने उसे भी, क्षीण कर दिया।
कहीं - कहीं दाने-दाने की,
कहीं अपने से मिलने को,
तरस रहे सभी।
इस बुरे दौर में भी सबने रहना सीख लिया।
कहते हैं, अजीब सी जिन्दगी है,
जिन्दगी कट कम रही है,
जिन्दगी काट ज्यादा रही है। ❑

मैं एक आजाद पंछी हूं

✍ **डॉ. कमलाक्षी देवी**
अधीक्षक जैव प्रौद्योगिकीविद
अनुसंधान एवं विकास विभाग, दुलियाजान

मैं एक आजाद पंछी हूं,
यह केवल मेरा मन है--
जो मुझे बांध रहा है
अंधेरे के एक छोटे से दायरे में ?

कोई रोक नहीं रहा है
कोई मुझे बांध नहीं सकता
कोई मुझे पीछे नहीं खींच रहा है...
यह मै हूं,
जो खुद को आज़ाद नहीं कर रहा है....

मुक्त आकाश के सैर करने के लिए
खुले जंगली साँस लेने के लिए
क्षितिज का पता लगाने के लिए
मेरी वास्तविक क्षमताओं को खोजने के लिए
और अपने असली स्व से मिलने के लिए
अब मुझे समझना होगा
मैं कोई टूटी हुई पतंग नहीं हूँ...

मैं एक आजाद पक्षी हूँ,
मजबूत इरादों के पंखों के साथ
आसमान में ऊंची उड़ान भरने के लिए ❑

" संकट और गतिरोध जब वे होते हैं तो कम से कम
उनका एक फायदा होता है, कि वे हमें सोचने पर मजबूर करते हैं....."

- जवाहरलाल नेहरू

जनहित में एक खत (मार्च 2020)

✍ **सुश्री नवनीता राजपूत**
पुत्री - कमलजीत राजपूत,
महाप्रबंधक - वेधन (परियोजना)
वेधन विभाग, दुलियाजान

मैं 2019 में पैदा हुआ था....
मुझे दुनिया में आए केवल 4 महीने हुए हैं
पर दुनिया को बहुत कुछ सीखा रहा हूँ
अब आप सोच रहे होंगे
कि एक चार महीने के बच्चे ने ऐसा क्या कर दिया??

माँ कहती थी खाना खाने के पहले और बाहर से आने के बाद हाथ धोलो, रोज़ नहाओ
पर बच्चे क्यूँ सुने,
उन्हें तो बस अपना कार्टून देखना है....
पर इन बच्चों ने मेरा नाम सुनकर
हाथ बार-बार धोना शुरू कर दिया
अब तो बच्चे हो या बड़े सब हाथ बार-बार धोते हैं
ये आदत मैंने दोबारा सबको समझायी
जितना साफ़-सुथरा रहोगे
उतना ही मुझसे तुम दूर रहोगे

सबने मिलकर दुनिया पर लकीरें खींच देश बनाए
मानव को जाति, रंग, धर्म, भाषा के आधार पर बाँटा
पर मैंने सबको माना एक
सबके साथ किया सलूक एक

मुझे कुछ लोगों ने उठाया
और भारत घुमाया
वहाँ की संस्कृति मैंने पूरी दुनिया को फिर याद दिलायी
दूसरों से ना करना – 'हैंड्शेक'
करो 'नमस्ते' रहो 'सेफ'
'ओम' की ध्वनि से करो वातावरण शुद्ध
'अलोम- विलोम' कर श्वसनतंत्र को करो मज़बूत
फल सब्ज़ी खड़े आहार खाओगे तो रहोगे तंदरूस्त
बचपन से ही मिट्टी से जुड़ोगे तो रहोगे रोगमुक्त

सब कुछ मैंने करवा दिया है बंद
छुट्टी कर दी है मैंने सबकी
सीख सीखना तुम अब सब
ब्यूटी पार्लर, gym, रेस्टोरेंट
को तुम भूल जाना अब
घर पर ही करना ये सब
नया कुछ करो तुम अब
आत्म-निर्भर बनो सब
अपना काम खुद करना सीखो अब

इतना महान बच्चा हूँ
नाम है मेरा COVID-19
मुझसे मत डरो
अपना ख्याल रखो
पुरानी रीतें थी सबसे ठीक
उनका पालन करो तुम ठीक!
नहीं करोगे तो कर दूँगा मैं कैद
सुधर जाओगे तो कर दूँगा आज़ाद
सावधान रहो, सतर्क रहो
यही है मेरा उपदेश!!
जिस दिन मैं देखूँगा हो गया है सब ठीक
दूर चला जाऊँगा मैं दुनिया से... उस दिन
भूल ना जाना ये सब
चला जाऊँगा मैं जब!! ❑

अरे मानव

✍रीबा कुमार
महाप्रबंधक (संविदा)
संविदा विभाग, दुलियाजान

नाम दिया तूने प्रगति
कर डाली सबकी दुर्गति।
जलचर,थलचर औ नभचर
तुझसे दिशा न कोई छूटी,
ना छोड़ा तूने कोई घर।
चहुं ओर मचाया हाहाकार
तब भी न गया अहंकार।
ठगी-सी रह गयी प्रकृति,
सहम गया सारा संसार।
अरे मानव!
अब तो बस करो ना!
सातों सिन्धु छान डाला,
जलचरों को मार डाला,
मगन थे अपनी ही लय में,
उन सभी पर जाल डाला ?
जिनका भक्षण कर सके, किया ?
न कर सके, तो गृह में सजा दिया?
क्या खारा क्या मीठा पानी,
उपयोग नहीं, दोहन किया?
लहरें रह गयीं तट पर,
बारम्बार सर पटक कर,
खारे पानी भरे आँखों में,
स्तम्भित-से खड़े सागर?
पर तेरी तृष्णा की तो
भरी नहीं कोई गागर
अरे मानव !!!
अब तो बस करो ना!
सारे पर्वत ध्वस्त कर डाला,
निर्झरिणी को भी बाँध डाला
वन बेबस थे, मौन खड़े
उन सबको भी काट डाला?
वक्ष चीरकर धरणी का,
हीरा, कोयला व रत्न निकाला?
पत्थर बेच, हुए पत्थर तुम ,
सृष्टि तकती रही गुमसुम,
पर तेरी क्षुधा की तो
रही न कोई आर-पार
अरे मानव!
अब तो बस करो ना!
न छूटा तुझसे अंतहीन गगन,
ना बच पायी उन्मुक्त पवन?
पखेरूओं के नीड़ उजाड़े
पिंजरबद्ध उनको कर डाले?
त्राहिमाम् करती रही धरा,
पर तूने कुछ भी ना सुना
क्रदंन पर सबके, तू कर विचार
ध्यान कर अपने संस्कार
अरे मानव !!!
अब तो बस करो ना!
अब तो बस करो ना!
अब तो बस करो ना!! ❑

हम ऑयल हैं!

✍प्रतीक बरुवा,
अधीक्षण अभियंता
गैस प्रबंधन सेवाएँ विभाग, दुलियाजान

नमन करते हैं उन कर्मयोगिओं को हम,
जिनकी वजह से आज हम सबल हैं।
परिश्रम करते हैं हर कर्तव्य में हम,
'सुरक्षित कार्य प्रणाली' हमारा कौशल है।
समर्पण की भावना रखते हैं हम,
हर लक्ष्य हमारा मुकम्मल है।
अर्पण हैं देश की सेवा में हम,
चुनौतियों के सामने हम अटल हैं।
मगन हैं 'उर्जा' उत्पादन में हम,
'द्रुततम विकास' की ओर हम मुसलसल हैं।
गगन से ऊँचा मानते हैं प्रगति की सीमा को हम,
'सामाजिक जिम्मेदारी' में हम अव्वल हैं ।
'किरण' हैं आशा की, अपने परिचालन क्षेत्र में हम!!
सुरक्षित भविष्य की निरंतर कोशिश में, हम 'ऑयल' हैं!!! ❑

वक्त के साथ सब बदल जाते हैं।

✍ **प्रवीण कुमार प्रभाकर,**
वरिष्ठ अभियंता (तैलाशय)
पूर्वी परिसंपत्ति, दुलियाजान

चाहे कितनी मुश्किलें आये, या गम के बादल मँडराये;
हौसला रखना हर क्षण तुम, चाहे कोई रास्ता नजर न आये ।
अगर आज तुम हारे हो तो, जीतने की तमन्ना रखना;
कल जो नया सवेरा होगा उसमे फिर तुम कोशिश करना ।।

क्योंकि,
वक्त के साथ सब कुछ बदल जाते हैं;
जो उभरे घाव है वो भर जाते हैं।

अगर कभी लगे जिंदगी में कि; अब मुझसे बर्दास्त न होगा;
ये गम बहुत ज्यादा है, इनसे छुटकारा अबकी बार न होगा ।
तो तुम, खुश हो जाना क्योंकि;
सवेरे से पहले गहन अँधियारा यही प्रकृति का नियम है;
हर वक्त रहना तैयार एक भी पल बर्बाद न करना ।।

क्योंकि,
वक्त के साथ सब बदल जाते हैं;
जो उभरे घाव है वो भर जाते हैं।

अगर मिले खुशियां जिंदगी में तो उनको बर्बाद न करना
जीना जी भर के उनके साथ अगले पल का इंतजार न करना।

क्योंकि,
वक्त के साथ सब बदल जाते हैं;
जो उभरे घाव है वो भर जाते हैं।। ❑

घमंडी बारिश

✍ **दिगंत डेका**
वरिष्ठ सहायक- I (हिंदी अनुवादक)
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग, दुलियाजान

यूँ नीले गगन को
जो तूने ढंक लिया
तुझसे पूछता हूँ मैं,
क्या इरादा है तेरा ?
क्या दुश्मनी है तेरी,
जो तूने इसे रोशन होने से रोका ?

ये पेड़ों के पत्ते,
ये लहलहाते पौधें,
जरा खिलने तो दे इन्हें,
आसमां का दीदार करने तो दे,
कब तक रोकेगा तू इन्हें
झूमने से, खिलने से ?

आखिर तेरा वजूद ही क्या है ?
टूटेगा अहंकार तेरा,
गिरेगा तू ज़मीन पर,
फिर से रोशन होगा आसमां।

ये जो तूने बिखेरी बूंदे पत्तों पर,
अलंकार बन सुंदरता बनी,
खिली हरियाली नई उमंग से,

क्षण भर है तेरी शक्ति
तू जान ले यह ,
हाँ, पर पता है,
बिना तेरे, खिल सकती नहीं हँसी उनकी,
तेरे अहंकार ही से है खिली
यह हरियाली उनकी। ❑

बाघजान

ससीन्द्र शर्मा,
ऑयल हायर सेकेन्ड्री स्कूल, दुलियाजान

बाघजान! जब से तुम्हारी खोज हुई,
ऑयल को एक नई सफलता मिली।
देश में तुम्हें शोहरत मिली,
बाघजान की जान में जान आयी।
तुमने ऑयल को नया सपना दिखाया,
प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाया।
'बाघजान-दुलियाजान' एक सफलता की जोड़ी,
बाघजान की उन्नति कम्पनी की उन्नति मानी।
बाघजान को ऑयल ने पूर्ण सहयोग दिया,
हर परिस्थिति में बाघजानवासियों का साथ निभाया।
एक दुर्घटना ने सब कुछ अनर्थ कर दिया।
नवरत्न के सुनाम पर प्रश्न चिह्न लग गया।
तिखेश्वर, दुर्लभ को शत कोटी प्रणाम,
बाघजान की जान बचाने जो गवायें अपनी जान।
ऑयल के दुर्दिन में साथ दो यारों,
'ऑयल है तो प्रगति है' भलीभाँति जानो।
'जनकल्याण' ही ऑयल की प्रमुख निति,
उद्देश्य सफल होगा अगर जनता साथ देती।

अभियुक्त!

प्रतीक बरुवा
अधीक्षण अभियंता
गैस प्रबंधन सेवाएँ विभाग, दुलियाजान

अनुभवों का इतिहास, तिक्त था।
स्नेह का तर्काधार, रिक्त था।
भावनाओं को केवल, व्यक्त होना था।
अभिलाषा मेरी सिर्फ 'उपयुक्त' होना था!
उद्देश्य, धैर्य का!! अविरक्त था।
पर तुम्हारा प्रतिदान, विषाक्त था!!
स्वास-रुद्ध जीवन अब, क्षण-भर का अवशेष है!
तमसावृत नयनों में, वंचना का आवेश है!!
भग्न हृदय अब, परित्यक्त है।
ये समस्त यौवन, शोणिताक्त है!
वेदनाहत मन, तुमसे आशक्त है!
निर्ममता अगर है अपराध,
तो तुम्हारी प्रवृत्ति अभियुक्त है !! ❑

कोरोना

श्रीमति तनु गुप्ता
पति - श्री सचिन गुप्ता
राजस्थान फील्ड्स, जोधपुर

चीन से सहसा आया एक वायरस,
रुकी रफ्तार, जिंदगी हुई नीरस।
मानव है सहमा, होगा क्या अब?
महामारी के शिकार क्या होंगे हम सब?
दिन चैन नहीं अब, रात भी बेहाल है,
कह रहे सब, ये वुहान जी का जंजाल है।
क्या हम बच पाएंगे, या दर्शन देंगे यमराज,
सोच-सोच कर सबका, हो रहा हाल खराब।
तभी साहसी देवदूत, बनकर आया मोदी,
जनता के लिए उसने, अपनी नींद भी खो दी।
हाथ जोड़कर कर रहा, विनती चहुं ओर,
कोई सड़क पर ना निकले, कदम लीजिए रोक।
जनता कर्फ्यू में तुमने, जी जान से मेरा साथ दिया,
भारतीय संस्कृति की एकता को, तुमने जग में रोशन किया।
स्वस्थ हैं, तो जिंदगी होगी फिर खुशहाल,
वरना है आइसोलेशन, जाना होगा अस्पताल।
अपनाकर अपनी संस्कृति, होगा कोरोना का तिरस्कार,
रखिए सोशल डिस्टेंसिंग, कीजिए नमस्कार।
रखिए सोशल डिस्टेंसिंग, कीजिए नमस्कार।। ❑

"ब्लैक कलर भावनात्मक रूप से बुरा होता है,
लेकिन हर ब्लैक बोर्ड स्टूडेंट्स की जिंदगी ब्राइट बनाता है।"

- डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम

लॉकडाउन के दौरान जीवन

✍ **मैत्रिका जोशी**
पुत्री – श्री रितेश मोहन जोशी
उप महाप्रबंधक (भूभौतिकी)
भूभौतिकी विभाग, दुलियाजान

लॉकडाउन के दौरान जीवन कैसा है? क्या लॉकडाउन ने हमारे जीवन को बदल दिया है? ये विचार हर किसी के मन के अंदर है। इन विचारों से परे, और भी विचार हैं यदि लॉकडाउन शहरों, गांवों, कस्बों आदि में समान है? क्या यह विभिन्न आय समूहों में समान है? क्या यह समाज के विभिन्न स्तरों पर समान है? अन्य देशों की तुलना में लॉकडाउन कितनी अच्छी / बुरी है?

लॉकडाउन के दौरान जीवन काफी शांत हो गया है। घर के अंदर शोर का स्तर ज़ायदा है लेकिन बाहर? अजीब तरह से शांत। वाहनों की आवाजाही और कम निर्माण गतिविधि के कारण यहां सन्नाटा छाया है। पक्षियों को चहकते और कुत्तों को भौंकते हुए सुनना संभव हो गया है। यहां तक कि कुछ जंगली जानवरों के जंगल छोड़कर शहर में आने की भी खबरें हैं। हाल ही में एक वीडियो वायरल हुआ जहां एक मोर दिल्ली के एक घर की खिड़की खटखटा रहा था। पेंगुइन का सड़क पे आना, हैदराबाद की रोड में तेंदुए का मिलना, नोएडा के मॉल के पास नीलगाई का झुण्ड यह बताता है की मानवता ने जबरदस्ती उनसे उनका क्षेत्र हड़प लिया था।

लॉकडाउन का जलवायु पर भी प्रभाव पड़ा है। वाहनों की आवाजाही कम होने से वायु प्रदूषण कम है, कम प्रदूषक का मतलब है कि गर्मी को अवशोषित करने के लिए कम कण है और इसलिए तापमान भी कम है। यह दिल्ली के रूप में गर्म शहर में मई के महीने में ओला वृष्टि द्वारा पता चलता है। दुनिया भर में मौसम का अजीब चलन दिख रहा है

इस लॉकडाउन ने हर किसी को पाक कला शास्त्री में बदल दिया है जो नए व्यंजनों को पका रहा है, एक कलाकार जो नए कलाओं में महारत हासिल करने की कोशिश कर रहा है, एक नृत्यकार जो नए नए नृत्य रूपों अभ्यास कर रहा है, एक गायक जो नए गाने की धूनी रमाये बैठा है, आदि, आदि। लॉकडाउन ने हमें घर का खाना और बाहर का खाना नहीं खाने के लिए मजबूर किया है। जब आप घरों में बाहर के पकवान बनाने की कोशिश करते हैं, तो अपनेपन की भावना भी होती है। मानव जाति के लिए स्वस्थ और सरल हैं, घर में बना भोजन, अब यह भोजन शरीर के वजन के घटने और बेहतर फिटनेस के परिणाम दिखा रहा है। घर में बना पौष्टिक आहार, एक ऐसा नायक जो केप नहीं पहनता है।

लॉकडाउन हमें पुराने दोस्तों और परिवार के सदस्यों के साथ ज्यादा से ज्यादा बातचीत करने में मदद की है। हम अपने रिश्तेदारों के साथ वीडियो चैट कर रहे हैं क्योंकि कोई भी यह दावा नहीं कर सकता है कि उनके पास समय नहीं है या कहें कि वो घर पर नहीं हैं।

ऑनलाइन खेल जो परिवार के साथ खेले जा सकते हैं लोगों को ऊबने से बचा रहे हैं, और इन कठिन समयों में पारिवारिक सम्बन्धों को और दृढ़ता प्रदान कर रही है। ऑनलाइन लूडो और सांप सीढ़ी सरीखे खेलों के अब लाखों ग्राहक हैं। यह हमें विभिन्न स्थानों पर तैनात दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ गेम खेलने में मदद करता है।

हर साल वसंत आते हैं, वसंत की सफाई वसंत ऋतु में होती है, 'जरूरत है' और 'जरूरत नहीं है' के बीच के सामान को छांटना। कम उपयोग और पुन: उपयोग की जानेवाली वस्तुओं को अलग अलग किया जाता है। पर वसंत की छुट्टियों का विलय इस साल गर्मियों की छुट्टियों के साथ हो गया है जो कुछ नए कौशल सीखने के लिए पर्याप्त समय है।

अंत में, लॉकडाउन के दौरान यह एहसास हुआ है कि हमें जीवन का आनंद लेने की कितनी कम आवश्यकता है और हम घरों में अपने जीवन की गुणवत्ता का कैसे आनंद लिया जा सकता है यह भी इस लॉकडाउन ने सिखाया है। लॉकडाउन के दौरान जीवन एक शिक्षक बन गया। सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा जो मिली है वो है समय के दौरान आत्मनिर्भर होना। घर का काम करना, खाना बनाना, घर से काम करना, चेहरे पर मुस्कान के साथ बच्चों की देखभाल करना। ठीक ही इसलिए क्योंकि मुस्कान ही एकमात्र वक्र है जो कई चीजों को सीधा करता है। ❑

कोरोना वायरस – मानव सभ्यता के लिए एक अभिशाप

✍ ऋतुराज बोरा
सामग्री विभाग
दुलियाजान

आज पूरे विश्व में कोरोना वायरस (कोविद-19) एक महामारी की तरह फ़ैल चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की जानकारी के अनुसार अब तक पूरे विश्व में उनचास लाख से अधिक लोग कोरोना वायरस (कोविद-19) की चपेट में आ चुके हैं और तीन लाख से अधिक व्यक्तियों की इस के कारण मृत्यु हो चुकी है। अभी तक जिन बीमारियों से मानव जाति को सामना करना पड़ा है इनमें से कोरोना वायरस सबसे अधिक घातक सिद्ध हो रहा है। क्या है यह कोरोना वायरस (कोविद-19)? – कोरोना वायरस (कोविद-19) एक अति-सूक्ष्म लेकिन खतरनाक वायरस है इसका आकार मानव के बाल की मोटाई से 900 गुना छोटा है। यह वायरस जानवरों से मानव में फैलता है और प्रभावित मनुष्य के श्वसन तंत्र को बुरी तरह से कमजोर कर देता है। यदि कोरोना से प्रभावित मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो तो यह वायरस उसके लिए प्राण घातक सिद्ध होता है। माना जा रहा है कि कोरोना वायरस (कोविद-19) चीन में वूहान प्रान्त में जानवरों के बाज़ार से मानवों में आया। हमारे देश भारत में अभी तक कोरोना से प्रभावित मरीजों की संख्या 1 लाख से अधिक हो गयी है और अभी तक तीन हजार से ज्यादा लोगों की कोरोना के कारण मौत हो चुकी है।

कोरोना वायरस (कोविद-19) के लक्षण

1. **बुखार** – स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना वायरस (कोविद-19) का मुख्य लक्षण तेज बुखार है। बच्चों और वयस्कों के लिए कम से कम 100 डिग्री फ़ारेनहाइट (37.7 डिग्री सेल्सियस) जरुरी है। मनुष्य का औसत दैनिक तापमान 98-6 डिग्री फ़ारेनहाइट (37 डिग्री सेल्सियस) है, लेकिन हम सभी का तापमान किसी एक दिन में थोड़ा ऊपर और नीचे भी हो सकता है (एक डिग्री या आधा डिग्री) इसलिए 99 डिग्री या 99.5 डिग्री फारेनहाइट को जरुरी तौर पर बुखार नहीं कहा जा सकता है।

2. **सूखी खांसी** – कोरोना वायरस (कोविद-19) का दूसरा लक्षण खांसी है। कोरोना वायरस (कोविद-19) से संक्रमित व्यक्ति को गले में खराश और सूखी खांसी आती है। किसी व्यक्ति को अगर सूखी खांसी के साथ तेज बुखार है तो उसे एक बार जांच करना जरुरी है।

3. **कोल्ड और फ्लू** – विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोरोना वायरस (कोविद-19) के लक्षण केवल बुखार, खांसी, सांस लेने की समस्या के अलावा फ्लू और कोल्ड जैसे भी लक्षण नजर आते है।

4. **सांस लेने में समस्या** – कोरोना वायरस (कोविद-19) की संक्रमण होने के 5 दिन के अंदर उस व्यक्ति को सांस लेने में समस्या हो सकती है।

5. **थकान**

6. **शरीर और सिर में दर्द**

7. **उल्टी और डायरिया**

कोरोना वायरस (कोविद-19) कैसे फैलता है ?

कोरोना वायरस (कोविद-19) बीमारी संक्रमित व्यक्ति के खांसने या छींकने से निकले थूक के बेहद बारीक कण हवा में फैल जाते हैं। इन कणों में कोरोना वायरस (कोविद-19) के विषाणु होते हैं। संक्रमित व्यक्ति के नज़दीक जाने पर ये विषाणुयुक्त कण सांस के रास्ते मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। मनुष्य को सांस लेने में ऑक्सीजन की आवश्यकता होता है जबकि कार्बन डाई ऑक्साइड शरीर के बाहर निकलता है। जबकि कोरोना के बनाए छोटे-छोटे एयरसैक में पानी जमने लगता है और इस कारण मनुष्य को सांस लेने में तकलीफ़ होती है और लंबी सांस नहीं ले पाते। ऐसे में मरीज़ को वेन्टिलेटर की ज़रूरत पड़ती है। और समय पर मेडिकल सहायता न मिलने पर मौत भी हो सकती है।

कोरोना वायरस (कोविद-19) का इलाज –

अभी तक कोरोना वायरस (कोविद-19) से बचाव का वैक्सीन नहीं बना है लेकिन अमेरिका, यूरोप और भारत सहित सभी देशों के डॉक्टर्स कोरोना के इलाज और इसकी वैक्सीन बनाने के लिए अनुसंधान कर रहे हैं। फिर भी ऐसा माना जा रहा है कि कोरोना वायरस (कोविद-19) की वैक्सीन बनाने में 6 महीने से लेकर 1 साल तक का समय लग सकता है।

कोरोना वायरस (कोविद-19) से बचाव और रोकथाम-

कोरोना वायरस (कोविद-19) बीमारी से खुद को बचाने के लिए हमें स्वच्छता का अवलम्बन करना बेहद जरुरी है। कोरोना वायरस (कोविद-19) की रोकथाम करने के लिए हम निम्नलिखित उपाय अपना सकते हैं।

– हाथों को सैनिटाइजर या फिर हैंडवॉश और पानी से कम से

कम 20 सेकंड तक धोएं।

- बाहर से घर वापस आते वक्त सबसे पहले अपने हाथ धोएं।
- मास्क का इस्तेमाल।
- छींक आते समय टिशू से मुंह को ढकना। ताकि दूसरे व्यक्ति इससे संक्रमित न हो।
- बाहर जाते समय सैनिटाइजर का इस्तेमाल करना। । भीड़-भाड़ जगहों पर न जाना।
- जरुरी काम न होने पर घर से बाहर न निकलना।
- खांसी या जुकाम वाले व्यक्ति से बातें करते या मिलते समय उससे करीब 1 मीटर यानी 3 फिट की दूरी बनाकर रखना।
- अपने हाथ से अपनी नाक, आंख और मुंह को न छूना। - एटीएम का इस्तेमाल करने से पहले और बाद सैनिटाइजर का इस्तेमाल करना।
- लिफ़्ट का इस्तेमाल न करना और सीढ़ियों का इस्तेमाल करते समय रेलिंग पर हाथ न रखना।
- उपयोग की गई टिशू को तुंरत डस्टबीन में डाल देना और अपने हाथ को धो लेना।
- अच्छी तरह से पका हुआ खाना ही खाना।

भारत सहित अन्य देशों पर कोरोना वायरस (कोविद-19) प्रभाव

हमारे देश भारत में कोरोना वायरस (कोविद-19) से बचाव के लिए 24 मार्च से 14 अप्रैल तक लॉक डाउन का पहला चरण लागू किया गया और इसके बाद लॉक डाउन को 31 मई तक बढ़ा दिया गया है। इसके अच्छे परिणाम सामने आये हैं और भारत में कोरोना के फैलने की गति पर रोक लगाने में काफी हद तक सफलता मिला है। अंत में हम यह कह सकते हैं कि-कोरोना वायरस (कोविद-19) एक वैश्विक महामारी है और हमें इसे पूरी गंभीरता से लेना चाहिए। अभी तक इसकी कोई वैक्सीन या दवाई उपलब्ध ना होने के कारण इससे बचाव ही एक मात्र उपाय है। अत: हमें चिकित्सकों द्वारा बताए गये सुरक्षा विधि के साथ-साथ सरकारी नियमों का पालन करना हमारे स्वयं के लिए और समाज के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। हमें एक ज़िम्मेदार नागरिक का कर्तव्य निभाते हुए घर में ही रहते हुए इस महामारी के संक्रमण को रोकना है। ❑

खुश रहिए

✍ **डॉ. सुजाता शर्मा,**
उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी (स्त्री रोग)
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

जिन्दगी में हम कई लोगों से मिलते हैं। हर किसी को अपनी जिन्दगी से बहुत सारी उम्मीदे हुआ करती है। और ज्यादातर लोगों के लिए इन्हीं उम्मीदों के पीछे भागते रहने में ही जिन्दगी निकल जाती है। हमारे पास ढंग से जीने के लिए समय ही नहीं बचता। मगर गौर करे तो जिन्दगी अच्छी तरह बिताने के लिए हमें बहुत सारी चीज़ों की जरूरत नहीं होती।

माना आजकल जीवन कठिन है, हमारे पूर्वजों की तुलना में। आबादी बढ़ रही है। इसलिए प्रतियोगिता भी ज्यादा है। फिर भी शायद थोड़ी कोशिश हम कर ही सकते हैं जीवन को खुशहाल बनाने के लिए। इसी विषय पर अपने थोड़े अनुभव मैं बताना चाहती हूँ।

उस समय हम अपनी एम बी बी एस की पढ़ाई बस खत्म करके एक कनिष्ठ चिकित्सक के तौर पर काम कर रहे थे। एक शाम जरूरी कालीन सेवा में एक मरीज आये। करीब पचास साल के होंगे। दूर के किसी गाँव से आये थे। बुखार और सांस लेने में तकलीफ लेकर आये थे। पूछने पर पता चला कुछ दिन पहले उनको कुत्ते ने काटा था। गाँव के गरीब और अनपढ़ लोग थे। बात को उस समय उतना ध्यान नहीं दिया। जब तक अस्पताल पहुंचे देर हो चुकी थी। जलातंक रोग के लक्षण शुरू हो गई थी। यह रोग जानलेवा है। इसलिए बिमारी शुरू होने से पहले ही बचाव के लिए प्रतिषेधक दी जाती है। उस रोगी को यह सब पता ही नहीं था। हमारे पास करने को ज्यादा कुछ बचा नहीं था। जरूरी कालीन सेवा में रोगी को प्राथमिक उपचार दिया गया। इतने में एक रिश्तेदार आयी। उनके हाथ में एक पानी का प्याला था। वो रोगी को पानी पिलाने की कोशिश करने लगी।

इस बिमारी में रोगी को पानी से डर लगता है। उस मरीज को भी लगा। फिर भी वो पानी पीने की पूरी कोशिश करने लगे। शायद साबित करना चाहते थे, सबसे और खुदसे भी, की उन्हें कुछ नहीं हुआ है। वो बीमारी को हरा सकते हैं। वो जीना चाहते थे -शायद अपने बीबी-बच्चों के लिए, अपने माता पिता के लिए। जीने की उनकी ये चाह देखकर वहां मौजूद सभी लोग हिल गए। सबकी आँखे नम हो गयी। ड्यूटी आवर खतम होने पर हम वहाँ से चले आये। उस मरीज का क्या हुआ किसी को पूछने की हिम्मत नहीं हुई। बस जिन्दा रहने की वो कोशिश हमेशा के लिए दिल में घर कर गयी।

दूसरी घटना एक महिला की है जो लाइलाज बिमारी से लड़ रहीं थी। उनके एक दो भाई बहन को भी वैसी बिमारी थी और उन में से किसी किसी की मृत्यु भी हो चुकी थी। मरीज को पता था, उनके साथ भी शायद ऐसा ही कुछ हो। फिर भी उन्होंने एक पल के लिए भी हिम्मत नहीं हारी। उनके साथ जो घरवाले आये थे उन्होंने भी कभी रोगी को इस डर का सामना न होने दिया। हंसी खुशी बिमारी का मुकाबला किया। जितने दिन जिन्दा रही, जिन्दादिल रही।

तीसरी घटना एक युवा महिला की है। वो समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े स्तर की थी। बचपन में हुए एक दुर्घटना के कारण उसके शरीर में कुछ ऐसी विसंगति आ गयी थी जिससे उसको बच्चा पैदा करने में समस्या हो सकती थी। हो सकती थी, होगी ही ऐसा निश्चित नहीं था। लेकिन वो और उसके घरवाले नहीं चाहते थे की बच्चे के लिए उसके जीवन पर संकट आये। इसलिए वो लोग कोशिश ही नहीं करना चाहते थे।

इसमें उसके पति और ससुराल वालों को भी कोई ऐतराज नहीं था। पति का कहना था आस पड़ोस और परिवार में जो बच्चे हैं वो अपने जैसे ही तो हैं। बेवजह अपनी पत्नी को मुश्किल में क्यों डाले। बहुत समय पढ़े लिखे लोगों में भी ऐसी मानसिकता देखने को नहीं मिलती। सच में, अगर हम चाहे तो बहुत आसानी से ही समस्याओं का हल निकाला जा सकता है।

हम में से ज्यादातर लोग शायद इन लोगों से ज्यादा किस्मत वाले हैं। लेकिन फिर भी हम खुश नहीं हैं। हम हमेशा ये देखते हैं क्या हमारे पास नहीं है और भूल जातें हैं कि जो हमारे पास है वो भी बहुत कम नहीं। ज्यादा हड़पने की कोशिश में भागते भागते हमारी जिन्दगी निकल जाती है। आज दुनिया का जो दु:खद हाल है उसका प्रधान कारण मनुष्य की स्वार्थपरता ही है। जो हमारे पास है उसकी कदर करना हमें तब आता है जब वह हमसे बिछड़ जाता है। खुशी से जिन्दा रहने के लिए हमें बहुत सारी चीज़ों की जरूरत नहीं होती। और जिन्दगी में सबकुछ हमारे हाथों में भी नहीं होती। इसलिए बिना किसी को वंचित किये, अपनी सच्ची और पूरी मेहनत से जितना मिले उसी में खुश रहना सीखिए। शायद काफी हो। खुश रहिए। ❑

सेंधा नमक – उपकारिता और गुण

✍ **श्रीमती संचिता बनर्जी**
मुख्य महाप्रबंधक, एलपीजी
एलपीजी विभाग, दुलियाजान

सेंधा नमक बनता कैसे है ?

आइये आज हम आपको बताते हैं कि नमक मुख्यत: कितने प्रकार का होता है। एक होता है समुद्री नमक, दूसरा होता है सेंधा नमक (rock salt)। सेंधा नमक बनता नहीं है पहले से ही बना बनाया है। पूरे उत्तर भारतीय उपमहाद्वीप में खनिज पत्थर के नमक को 'सेंधा नमक' या 'सैन्धव नमक', लाहोरीनमक आदि आदि नाम से जाना जाता है। जिसका मतलब है 'सिंधया सिन्धु के इलाक़े से आया हुआ'। वहाँ नमक के बड़े बड़े पहाड़ है सुरंग है। वहाँ से ये नमक आता है। मोटे मोटे टुकड़ों में होता है आजकल पीसा हुआ भी आने लगा है यह ह्रदय के लिये उत्तम, दीपन और पाचन में मदद रूप, त्रिदोषशामक, शीतवीर्य अर्थात ठंडी तासीर वाला, पचने में हल्का है। इससे पाचक रस बढ़ते हैं। अत: आप ये समुद्री नमक के चक्कर से बाहर निकले। काला नमक ,सेंधा नमक प्रयोग करें, क्योंकि ये प्रकृति का बनाया है।

भारत में 1930 से पहले कोई भी समुद्री नमक नहीं खाता था विदेशी कंपनीयां भारत में नमक के व्यापार में आज़ादी के पहले से उतरी हुई है, उनके कहने पर ही भारत के अँग्रेजी प्रशासन द्वारा भारत की भोली भाली जनता को आयोडिन मिलाकर समुद्री नमक खिलाया जा रहा है, हुआ ये कि जब ग्लोबलाईसेशन के बाद बहुत सी विदेशी कंपनियों (अन्नपूर्णा, कैप्टनकुक) ने नमक बेचना शुरू किया तब ये सारा खेल शुरू हुआ! अब समझिए खेल क्या था?? खेल ये था कि विदेशी कंपनियों को नमक बेचना है और बहुत मोटा लाभ कमाना है और लूट मचानी है तो पूरे भारत में एक नई बात फैलाई गई कि आयोडीन युक्त नामक खाओ, आयोडीन युक्त नमक खाओ! आप सबको आयोडीन की कमी हो गई है। ये सेहत के लिए बहुत अच्छा है आदि आदि बातें पूरे देश में प्रायोजित ढंग से फैलाई गई। और जो नमक किसी जमाने में 2 से 3 रूपये किलो में बिकता था। उसकी जगह आयोडीन नमक के नाम पर सीधा भाव पहुँच गया 8 रूपये प्रतिकिलो और आज तो 20 रूपये को भी पार कर गया है।

दुनिया के 56 देशों ने अतिरिक्त आयोडीन युक्त नमक 40 साल पहले बैन कर दिया अमेरिका में नहीं है जर्मनी में नहीं है फ्रांस में नहीं, डेन्मार्क में नहीं, डेन्मार्क की सरकार ने 1956 में आयोडीन युक्त नमक बैन कर दिया क्यों?? उनकी सरकार ने कहा हमने आयोडीन युक्त नमक खिलाया! (1940 से 1956 तक) अधिकांश लोग नपुंसक हो गए! जनसंख्या इतनी कम हो गई कि देश के खत्म

होने का खतरा हो गया! उनके वैज्ञानिकों ने कहा कि आयोडीन युक्त नमक बंद करवाओ तो उन्होने बैन लगाया। और शुरू के दिनों में जब हमारे देश में ये आयोडीन का खेल शुरू हुआ इस देश के बेशर्म नेताओं ने कानून बना दिया कि बिना आयोडीन युक्त नमक भारत में बिक नहीं सकता। वो कुछ समय पूर्व किसी ने कोर्ट में मुकदमा दाखिल किया और ये बैन हटाया गया।

आज से कुछ वर्ष पहले कोई भी समुद्री नमक नहीं खाता था सब सेंधा नमक ही खाते थे।

सेंधा नमक के फ़ायदे -

सेंधा नमक के उपयोग से रक्तचाप और बहुत ही गंभीर बीमारियों पर नियन्त्रण रहता है। क्योंकि ये अम्लीय नहीं ये क्षारीय है (alkaline) क्षारीय चीज जब अमल में मिलती है तो वो न्यूटल हो जाता है और रक्त अमलता खत्म होते ही शरीर के 48 रोग ठीक हो जाते हैं।

ये नमक शरीर में पूरी तरह से घुलनशील है। और सेंधा नमक की शुद्धता के कारण आप एक और बात से पहचान सकते हैं कि उपवास, व्रत में सब सेंधा नमक ही खाते हैं। तो आप सोचिए जो समुद्री नमक आपके उपवास को अपवित्र कर सकता है वो आपके शरीर के लिए कैसे लाभकारी हो सकता है ??

सेंधा नमक शरीर में 97 पोषक तत्वों की कमी को पूरा करता है! इन पोषक तत्वों की कमी ना पूरी होने के कारण ही लकवे (paralysis) का अटैक आने का सबसे बड़ा जोखिम होता है सेंधा नमक के बारे में आयुर्वेद में बोला गया है कि यह आपको इसलिये खाना चाहिए क्योंकि सेंधा नमक वात, पित्त और कफ को दूर करता है।

यह पाचन में सहायक होता है और साथ ही इसमें पोटैशियम और मैग्नीशियम पाया जाता है जो ह्रदय के लिए लाभकारी होता है। यही नहीं आयुर्वेदिक औषधियों में जैसे लवण भास्कर, पाचन चूर्ण आदि में भी प्रयोग किया जाता है।

समुद्री नमक के भयंकर नुकसान -

ये जो समुद्री नमक है आयुर्वेद के अनुसार ये तो अपने आप में ही बहुत खतरनाक है! क्योंकि कंपनियाँ इसमें अतिरिक्त आयोडीन डाल रही है। अब आयोडीन भी दो तरह का होता है एक तो भगवान का बनाया हुआ जो पहले से नमक में होता है। दूसरा होता है "industrial iodine" ये बहुत ही खतरनाक है। तो समुद्री नमक जो पहले से ही खतरनाक है उसमें कंपनियां अतिरिक्त industrial iodine डालकर पूरे देश को बेच रही है। जिससे बहुत सी गंभीर बीमरियां हम लोगों को आ रही है। ये नमक मानव द्वारा फ़ैक्टरियों में निर्मित है।

आमतौर से उपयोग में लाये जाने वाले समुद्री नमक से उच्च रक्तचाप (high BP), डाइबिटीज़, आदि गंभीर बीमारियों का भी कारण बनता है। इसका एक कारण ये है कि ये नमक अम्लीय (acidic) होता है। जिससे रक्त अम्लता बढ़ती है और रक्त अमलता बढ्ने से ये सब 48 रोग आते हैं। ये नमक पानी में कभी पूरी तरह नहीं घुलता हीरे (diamond) की तरह चमकता रहता है इसी प्रकार शरीर के अंदर जाकर भी नहीं घुलता और अंत इसी प्रकार किडनी से भी नहीं निकल पाता और पथरी का भी कारण बनता है।

रिफाइण्ड नमक में 98% सोडियम क्लोराइड ही है शरीर इसे विजातीय पदार्थ के रुप में रखता है। यह शरीर में घुलता नहीं है। इस नमक में आयोडीन को बनाये रखने के लिए Tricalcium Phosphate, Magnesium Carbonate, Sodium Alumino Silicate जैसे रसायन मिलाये जाते हैं जो सीमेंट बनाने में भी इस्तेमाल होते हैं। विज्ञान के अनुसार यह रसायन शरीर में रक्त वाहिनियों को कड़ा बनाते हैं, जिससे ब्लाक्स बनने की संभावना और आक्सीजन जाने में परेशानी होती है। जोड़ो का दर्द और गठिया, प्रोस्टेट आदि होती है। आयोडीन नमक से पानी की जरुरत ज्यादा होती है। 1 ग्राम नमक अपने से 23 गुना अधिक पानी खींचता है। यह पानी कोशिकाओं के पानी को कम करता है। इसी कारण हमें प्यास ज्यादा लगती है।

आप इस अतिरिक्त आयोडीन युक्त समुद्री नमक खाना छोड़िए और उसकी जगह सेंधा नमक खाइये!! सिर्फ आयोडीन के चक्कर में समुद्री नमक खाना समझदारी नहीं है, क्योंकि जैसा हमने ऊपर बताया आयोडीन हर नमक में होता है सेंधा नमक में भी आयोडीन होता है बस फर्क इतना है इस सेंधा नमक में प्रकृति के द्वारा बनाया आयोडीन होता है इसके इलावा आयोडीन हमें आलू, अरवी के साथ-साथ हरी सब्जियों से भी मिल जाता है। ❑

" आप मानवता में विश्वास मत खोइए। मानवता सागर की तरह है, अगर सागर की कुछ बूँदें गन्दी हैं, तो सागर गन्दा नहीं हो जाता... "

- महात्मा गांधी

जीवन जीने की कला – योग

✍रेखा भण्डारी उपाध्याय
पति – यादव उपाध्याय
एल. पी. जी. विभाग, दुलियाजान

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में अनेक ऐसे पल हैं जो हमारी स्पीड पर ब्रेक लगा देते हैं। हमारे आस-पास ऐसे अनेक कारण विद्यमान है जो तनाव, थकान तथा चिड़चिड़ाहट को जन्म देते हैं जिससे हमारी जिंदगी अस्त-व्यस्त हो जाती है, ऐसे जिंदगी को स्वस्थ तथा ऊर्जावान बनाये रखने के लिए योग एक ऐसी रामबाण दवा है जो मस्तिष्क को ठंड तथा शरीर को फिट रखता है। यदि सही ढंग से देखें तो योग जीवन की गति को एक संगीतमय रफ्तार मिल जाती है।

योग हमारी भारतीय संस्कृति की प्राचीनतम पहचान है। योग धर्म, आस्था और अंधविश्वास से परे एक सीधा विज्ञान है । योग जीवन जीने की कला है, योग एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। दरअसल, धर्म मनुष्य को खूंटे से बाँधता है परंतु योग सभी तरह के खूँटों से मुक्ति का मार्ग बताता है। आज के प्रदूषित वातावरण में योग एक ऐसी औषधि है जिसका कोई साईड इफैक्ट नहीं है, बल्कि योग से अनेक आसन जैसे कि शवासन हाई ब्लड प्रेशर को सामान्य करता हैं जीवन के लिए संजीवनी है कपालभाति प्राणायाम, भ्रामरी प्राणायाम मन को शांत रखता है वक्रासन हमें अनेक बीमारियों से बचाता है। आज कंप्यूटर की दुनिया में दिन-भर उसके सामने बैठे-बैठे काम करने से अनेक लोगों को कमर दर्द एवं गर्दन दर्द की शिकायत एक आम बात हो गई है ऐसे में योग हमें दर्द निवारक दवा से मुक्ति दिलाता है।

योग में ऐसे अनेक आसन हैं जिनको जीवन में अपनाने से कई बीमारियाँ समाप्त हो जाती हैं और खतरनाक बीमारियों का असर भी कम हो जाता है, 24 घंटे में से महज कुछ मिनट का ही प्रयोग यदि योग में उपयोग करते हैं तो अपनी सेहत को हम चुस्त-दुरुस्त रख सकते हैं। फिट रहने के साथ ही योग हमें पॉजिटिव एनर्जी भी देता है। योग से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता हैं। हमारे देश की ऋषि परंपरा योग को आज विश्व भी अपना रहा है। जिसका परिणाम है कि 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (International Yoga Day) मनाये जाने के लिए संयुक्त राष्ट्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा रखे गये प्रस्ताव को अनेक देशों ने अत्यंत सीमित समय में पारित कर दिया। और 21 जून 2015 को प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पूरी दुनिया में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया जो प्रत्येक वर्ष मनाया जा रहा है।

--योग करने से अनेक लाभ होते हैं। हमारे शरीर के अंदर रक्त संचालन क्रिया ठीक से होने लगती हैं। शारीरिक भद्दापन दूर हो जाता है। फेफड़ों में शुद्ध वायु का प्रवेश होता है। रक्त की गन्दगी दूर होती है। पसीना अच्छी तरह निकलने से रोम-कूपों में मैल नहीं जमती है। इससे शरीर पर स्वच्छ वायु का अच्छा प्रभाव पड़ता है। शरीर में आलस्य नहीं रहता जिससे हम अपने जीवन के आवश्यक कामों को सुचारु रूप से सम्पन्न कर लेते हैं। योग से शरीर के स्वस्थ्य रहने के साथ ही साथ मस्तिष्क भी सबल हो जाता है। जब तक शरीर स्वस्थ नहीं रहेगा, तब तक हमारा मस्तिष्क शक्तिशाली नहीं बन सकता। अंग्रेजी में एक कहावत Sound minds in a sound. body इसी बात की पुष्टि करती है।

योग करने के लिए योग सम्बंधी नियमों का अवश्य पालन करना चाहिए। योग करने का स्थान घर का कोई कोना नहीं होना चाहिए बल्कि उसके लिए हमें खुले मैदान की शरण लेनी चाहिए जहाँ शुद्ध हवा प्राप्त हो सके। शरीर से पसीना आने लगनें पर योग बन्द कर देना चाहिए, योग करते समय गहरी साँस लेनी चाहिए, जिससे फेफड़े भरपूर फैंले और सिकुड़ें। साँस नाक से लेनी चाहिए, मुँह से नहीं। अंत हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे देश के हर नागरिक इस बिना मूल्य की दवा को अपना कर नियमित रूप से योग कर अपने जीवन को सुखी तथा राष्ट्र को शक्तिशाली बनायेंगे। ❑

> " आपका लक्ष्य किसी जादू से नहीं पूरा होगा बल्कि आपको ही अपना लक्ष्य प्राप्त करना पड़ेगा। कमजोर ना बनें, शक्तिशाली बनें और यह विश्वास रखें कि भगवान हमेशा आपके साथ है। "
>
> \- बाल गंगाधर तिलक

आज की शिक्षा और हम

✍ **सुमित भद्रा,**
केनरा बैंक, दुलियाजान

आज हम एक ऐसे समय में जी रहे हैं जहां शिक्षा एक प्रोडॉक्ट है। शिक्षा नामक प्रोडॉक्ट को कौन कितना महंगा बनाकर बेच सकता है, उसे लेकर शिक्षा के बाजार में एक प्रतियोगिता चल रहा है। प्रोडॉक्ट की मार्केटिंग ऐसे किया जाता है कि जितना महंगा प्रोडॉक्ट उतनी ही अच्छी शिक्षा। सिर्फ यही नहीं इस प्रोडॉक्ट के साथ कोई अन्य प्रोडॉक्ट भी शिक्षा के कारखाने से बेचा जाता है। जैसे - कॉपी, किताबें, जूते, मोजे, टाई इत्यॉदि।

आज का समाज भी ऐसा हो गया है कि अपने बच्चों को ऐसी ही कारखानाओं में भेजने को फैशन बना चुका है, ताकि वह कह सके कि उनका बेटा एक बड़ा कारखाना का प्रोडॉक्ट है। पर सच तो यह है कि इन कारखानों में सिर्फ दिखावा ही होता है। वहां के बच्चों को प्राईवेट टिउसन की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है। हर विषय के लिए अलग-अलग शिक्षक प्राईवेट तौर पर नियुक्त किया जाता है। बच्चों को केवल यह सिखाया जाता है कि कैसे टॉप किया जाये। सबको पीछे छोड़कर कैसे आगे बढ़ा जाय। यह नहीं सिखाया जाता कि कैसे हम बातचीत के जरिए एक दूसरे की ज्ञान वृद्धि कर सकते हैं। बच्चों को इतनी प्रतिस्पर्धा में डाल दिया जाता है मानों कि वह प्रेशर कुकर में कुक हो रहा है। प्रतिस्पर्धा में भले ही आगे निकल जाय पर वह जीवन की प्रतियोगिता में पीछे छूट जाता है। प्रेशर झेलते-झेलते हम नौकर बनने के सिवा कुछ कर नहीं पाते।

हर विषय के प्रश्नों का उत्तर दे दिया जाता है और उसको वैसे ही लिखना अनिवार्य होता है जैसे दिया जाता है, यानी यहां पर हमारी मौलिकता भी खतम हो जाती है। हम अपने तरीके से किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं लिख सकते हैं। ऐसे बच्चे बड़े होकर क्या अपना और अपने समाज के लिए कुछ मौलिक कार्य कर पायेगा, कभी नहीं। मौलिकता हमारे जीवन को सही दिशा देता है और जिसे यह कारखाने पूरी तरह से खत्म कर देते हैं।

अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने का मतलब समाज में उसका एक अलग जगह बन जाता है। आज के जीवन में अंग्रेजी बहुत जरूरी है पर क्या हमें अपनी मातृभाषा भूल जानी चाहिए, कभी नहीं, पर हकीकत तो यह है कि अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाला ज्यादातर बच्चे अपनी भाषा को अच्छी तरह से नहीं जानते हैं।

मेरे कहने का यह मतलब नहीं है कि महंगे स्कूलों की शिक्षा का मानदंड निम्न है। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि अगर प्रोडॉक्ट महंगा है तो उसे व्यवहार करनेवाला हर बच्चा भी महंगा प्रोडॉक्ट बनकर निकलना चाहिए जो वास्तव में सच नहीं है। ❑

" हमारी राह भले ही भयानक और पथरीली हो,
हमारी यात्रा चाहे कितनी भी कष्टदायक हो,
फिर भी हमें आगे बढ़ना ही है..
सफलता का दिन दूर हो सकता है, पर उसका आना अनिवार्य है...."

- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

दो धारी तलवार

✍ **डॉ. नवनीत स्वरगिरी**
मुख्य चिकित्सा अधिकारी (दंत चिकित्सा)
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

पृथ्वी में शायद मानव जाति ही ऐसी है जो अपने अलावा दूसरी सभी जीवित प्रजातियों का ख्याल रखने का सामर्थ्य रखती है, लेकिन सर्वश्रेष्ठ कही जाने वाली इस जाति ने खुद को सभी से निकृष्ट साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी हैं। इसमें हम भारतीय अपने को हर विषय में पीठ ठोककर शाबाशी देते हैं कि हम हर क्षेत्र में बहुत सक्षम हैं, लेकिन जिस देश के लोगों को खुले में सौच न करने और यहाँ वहाँ न थूकने के लिए प्रधानमंत्री को देश के आजाद हुए इतने वर्षों के पश्चात् भी आग्रह करना पड़े, हम आसानी से समझ सकते हैं कि हम भारतीयों की मन:स्थिति कैसी है। हम बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं, लेकिन जब उसमें अमल करने की नौबत आती है, तो कहीं पीछे छूट जाते हैं।

मसलन इन दिनों जहाँ विश्व एक, महामारी से लड़ रहा है तो हमारे देशवासी अभी भी डॉक्टर, नर्स और अन्य स्वास्थ्य कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार करने में लगे हुए हैं। जहाँ स्वास्थ्य कर्मचारी अपने जीवन की परवाह किए बिना लोगों की सेवा में लगे हुए हैं, जहाँ लोग अपने प्रियजनों के शवों का दाह संस्कार करने से भी कतराते हैं, वहाँ अभी भी मकान मालिक जिनके किराएदार स्वास्थ्य सेवाओं में लगे हुए हैं, उन्हें घर से निकाल रहे हैं।

हाथ में एक महँगा स्मार्ट फोन लेकर और एक बटन दबाकर हम दुनिया को अपनी मुट्ठी में रखते हैं ऐसा हमारा मानना है। हम ही पुष्टी करते हैं कि एक चिकित्सक से गलती हुई है और उसने गलत इलाज किया है और इसलिए हम ही निर्णय लेते हैं कि उस चिकित्सक और उसकी चिकित्सा सेवाओं के लिए किस-किस को क्या-क्या दण्ड मिलना चाहिए।

जरा एक चिकित्सक के दृष्टिकोण से देखिए कि वह भला किसी भी रोगी की जान कैसे ले सकता है उसने सदैव एक इंसान के बेहतरी के लिए, उसकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया है। आज कितने ही चिकित्सक इस महामारी में चिकित्सा प्रदान करते हुए अपनी जान तक गँवा रहे हैं। आप अनुमान भी नहीं लगा सकते कि एक पी. पी. ई. को पहनकर काम करने में कितनी असुविधा होती है। वे लम्बे समय तक न कुछ खा-पी सकते हैं और न शौचालय तक जा सकते हैं, एक ऐसे जीवित प्राणी के इलाज में लगे हुए हैं जिसका भविष्य निश्चित नहीं है और हम फिर भी इतने संवेदनशील नहीं है कि उनके इस त्याग को समझें और सराहें।

कौन सा ऐसा व्यवसाय है जहाँ लोग अपने जीवन को निरंतर आरामदायक बनाने में नहीं लगे हुए? फिर एक चिकित्सक, जब इतने सालों की मेहनत के बाद अपने जीवन को सँवारता है, तो लोग उससे इतनी ईर्ष्या क्यों करते हैं मुझे नहीं लगता कि किसी भी व्यवसाय को करने हेतु किसी भी इंसान को इतनी तैयारी करनी होती है जितना एक चिकित्सक को करनी पड़ती हैं क्योंकि इसमें किसी की जान का जोखिम होता है।

आप सोचिए कि जब आप अपने बच्चे को किसी शिक्षक के पास अध्ययन हेतु भेजते हैं और किसी कारणवश आपका बच्चा पढ़ाई में उतना सफल नहीं हो पाता जितना आपने उम्मीद की थी तो क्या आप शिक्षक के साथ हाथापाई पर उतर आते हैं? कितने ही ऐसे उदाहरण हैं जहाँ हमने देखा है कि लोगों की जान चली गई है - लापरवाह और भ्रष्ट ठेकेदार जो सड़कों या पुल को अच्छे से निर्माण नहीं करते- फलस्वरूप हादसे होते हैं - कहीं हम किसी से कोई भी जवाबदेही नहीं माँगते, लेकिन न जाने क्यों हमारे देश में ईश्वर तुल्य चिकित्सकों और चिकित्सा प्रदान करने वालों की जान पर बन आई हैं।

जिस देश में सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं की अवस्था चिंताजनक है और जहाँ लोगों को अपने स्वास्थ्य की चिंता खुद कर निजी अस्पतालों का रुख करना पड़ता है, वहाँ लोगों से ऐसा व्यवहार सच में अति दुर्भाग्यजनक है।

मैं ये नहीं कहता कि सभी जगहों में स्वास्थ्य कर्मी एक जैसे होते हैं, लेकिन सभी के साथ ऐसा वर्ताव बहुत निन्दनीय है।

समस्त जगत में शायद हमारा ही ऐसा देश है जिसमें चिकित्सा सेवा प्रदान करने वालों की ऐसी दुर्दशा होती है - जहाँ उन्हें उनका पर्याप्त सम्मान नहीं मिलता, जहाँ एक रोगी के निधन पर लोग अस्पताल तहस नहस कर देते हैं। जब तक खुद के हाथ नहीं जलते, लोगों को उसकी पीड़ा का एहसास नहीं होता।

ऐसी परिस्थिति में ये सचमुच चिंताजनक विषय है कि आज लोग एक चिकित्सक बनना पसंद करेंगे कि नहीं? आग्रह यही है कि चिकित्सकों को इंसान समझें और विश्वास रखें कि कोई भी चिकित्सक किसी भी रोगी की जान नहीं लेना चाहता - बाकी आपके हाथ में तो गूगल है ही। ❑

सुकून की तलाश और बिंटान द्वीप की यात्रा

✍ **प्रतीक बरुवा**
अधीक्षण अभियंता
गैस प्रबंधन सेवाएँ विभाग, दुलियाजान

ज़िन्दगी में सुकून की तलाश में लोग कुछ भी कर जाते हैं। सुकून भरी नौकरी, सुकून से भरी गृहस्थी, हर जगह ये कोशिश होती है की सुकून भरी सांस हम ले पाए। लेकिन, अक्सर इस भागदौड़ वाली ज़िन्दगी की यांत्रिकता में लोग नीरसता का शिकार हो जाते हैं और हर जगह सुकून मिलकर भी लोग मानसिक तौर पर नवीनता की चाह करते रहते हैं। रोजमर्रा की ऐसी कश्मकश से दूर असली सुकून की चाहत में ज्यादातर लोग 'यात्रा' को अपनाते हैं। यात्रा सिर्फ नयी जगहों या नयी चीज़ों से वाक़िफ़ होने का जरिया नहीं रहा, बल्कि चारों तरफ नए नज़ारों से सुकून भरी सांस लेने का एक अहम साधन बन चुका है। लेकिन हमने अपने भूतपूर्व भ्रमण में, 'यात्रा' के इन दोनों माइनो को शामिल किया। जब विश्राम और नयी चीज़ों को देखने के अवसर को एक ही यात्रा में जोड़ दिया जाए, तो वो यात्रा सुखद और सार्थक भी होती है। ऐसी ही एक यात्रा में हम, यानी मैं, अपनी अर्धांगिनी और 6 वर्षीय पुत्री, निकल पड़े सिंगापुर और बिंटान द्वीप की ओर। मैं इस यात्रा-वृत्तांत में पाठकों को बिंटान द्वीप का एक संक्षिप्त वृतान्त देने की कोशिश करूँगा।

बिंटान द्वीप इन्डोनेशियाई सरकार द्वारा नियंत्रित रियाओ द्वीप-समूह का एक बड़ा द्वीप है। करीब 60 हज़ार वर्ग किलोमीटर की क्षेत्र वाला ये बिंटान द्वीप दक्षिण चीन सागर में स्थित है और सिंगापुर से महज 50 मिनट की नौका यात्रा से इस द्वीप में पंहुचा जा सकता है। वैसे रियाओ द्वीप समूहों के सभी सदस्य द्वीप अपने आप में अच्छे पर्यटन स्थल माने जाते हैं लेकिन बिंटान द्वीप पिछले कुछ सालों में नयेपन और एकांत की तलाश में जुटे पर्यटकों के लिए आकर्षण का उभरता हुआ केंद्र बनता नज़र आ रहा है। हमने भी जब सिंगापुर के लिए यात्रा का प्रबंध करना शुरू किया, तो हमें पता लगा की सिंगापुर के दौरे के साथ 2 / 3 दिन का बिंटान का एक सफर आसानी से और तुलनात्मक रूप से कम खर्चे में जोड़ा जा सकता है। सिंगापुर की चकाचौंध से अलग और मालदीव्स, मॉरिशस जैसी जगमगाती समुद्र तटीय पर्यटन स्थलों से काफी शांत, ये बिंटान द्वीप पर्यटकों को एक अनोखे आराम देह तजुर्बे से रूबरू कराती है। सन 2019 में नवंबर महीने के दूसरे हफ्ते में हमें बिंटान का मौसम पर्यटन के लिए एकदम उपयुक्त लगा। आसमान में दो चार बादल और तापमान 32 डिग्री के आसपास हो तो तटीय पर्यटन स्थलों में आप 'रिसोर्ट' या 'होटलों' के तरणतालों में तैराकी करें या समुद्र के रेतीले किनारों पे टहलने के लिए जाए, पुराने हिंदी चलचित्रों के प्रसिद्ध खलनायक अजित की भाषा में 'पूरा इलाका आपका है!!'

केलोंग सी फ़ूड रेस्टोरेंट में लेखक

बहरहाल, चलचित्रों से यात्रा में वापिस आते हुए, हमें सिंगापुर से बिंटान द्वीप का सामुद्रिक व्यवधान नौका यात्रा से घटाना था। इसके लिए सिंगापुर और बिंटान द्वीप के बीच 'बिंटान लैगून फेरी' नामक विलास-नोकों का आवागमन होता है। ये काफी बड़े दुमंजिला वातानुकूलित नौके 'सिंगापुर स्ट्रैट' नामक समुद्री मार्ग से होते हुए बिंटान पहुँचती हैं। ये समुद्री मार्ग साल के अधिकतर समय एकदम शांत रहता है और पर्यटकों को तेज हवाएं या तूफ़ान का सामना नहीं करना पड़ता। सिंगापुर के समुद्री सीमा में 'तनह मेराह' नामक एक नौका 'टर्मिनल' है,जो सिंगापुर के चांगी हवाई अड्डे से सिर्फ 10 मिनट में गाड़ी से पहुंचा जा सकता है। 'तनह मेराह' एक नौका 'टर्मिनल' होते हुए भी आधुनकिता में किसी हवाई अड्डे से कम नहीं है और 'टर्मिनल' में प्रवेश से शुरू करके नौकों में सवारी तक, हर प्रक्रिया हवाई अड्डों जैसी ही है। भारतीय पर्यटकों के लिए बिंटान की सैर और भी आसान होती है क्यूंकि सिंगापुर वीसा, भारतीय पासपोर्ट और भारत के लिए वापसी विमान टिकट के प्रदर्शन से ही आपको बिंटान में प्रवेश के लिए आप्रवासन (इमीग्रेशन) अधिकारी अनुमति देते हैं। इन्डोनेशियाई सरकार के अंतर्गत होने के बावजूद, बिंटान के लिए कोई अलग वीसा या वीसा शुल्क देने की ज़रुरत नहीं होती। पर्यटकों से स्थिर चित्रों की भी मांग नहीं की जाती। आप्रवासन अधिकारी सिर्फ दो तरह के चीज़ों पर नज़र रखते हैं, पहला - कोई भी अवैध सामग्री जैसे 'ड्रग्स' और दूसरा- ताज़े फल!! मेरे बैग से एक सेब और एक संतरा बरामत करके आप्रवासन अधिकारियों ने ख़ुशी ख़ुशी हमें नौके पर सवारी की अनुमति दी। वैसे ताज़े फलों पर पाबंदी हमें समझ में नहीं आयी क्योंकि केक, बिस्कुट जैसी अन्य खाद्य वस्तुओं में उन्हें कोई ऐतराज़ नहीं था। करीब एक घंटे की आराम देह नौका यात्रा के पश्चात बिंटान के तटीय सीमा पर खड़े 'बान्दार बेंटानटेलानी'

नौका 'टर्मिनल' की पहली झलक हमें मिली। वहाँ भी बिना किसी परेशानी के आप्रवासन प्रक्रिया से गुजरते हुए, आख़िरकार हमने बिंटान की हरी भरी उपजाऊ भूमि पर अपना पहला कदम रखा।

यात्रा से पूर्व हमने बिंटान में रहने और घूमने की पूरी प्रक्रिया को निर्धारित करके रखा था। इसके लिए हमने 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' नामक 'दक्षिण चीन सागर समुद्र तट' से संलग्न 'रिसोर्ट' की व्यवस्था की थी। नौका 'टर्मिनल' से 'रिसोर्ट' में ले जाने के लिए 'रिसोर्ट' से वातानुकूलित बसें हमारा और 'निर्वाणा' में ही प्रबंधित दूसरे पर्यटकों का इंतज़ार कर रही थी। लेकिन बिंटान में हमारा भ्रमण कार्यक्रम कुछ अलग था। 'रिसोर्ट' से आये हुए बस में अपना सामान सौंप कर हमारे इंतज़ार में पहले से रुके हुए मागदर्शक श्रीमान माइकेल से हमारी पहली मुलाकात हुई। काफी फुर्तीले मिज़ाज़ वाले माइकेल जी ने अपना परिचय अस्खलित अंग्रेजी में कुछ ऐसे दिया- (जिसे मैं हिंदी की सहायता से लिख रहा हूँ) 'नमस्कार अभ्यागत-गण, बिंटान द्वीप में आपका स्वागत है, मैं हूँ आपका आज के दिन का मार्गदर्शक माइकेल और मुझे 'माइकेल लर्न्सतूरॉक' संगीत मंडली के गाने सुनना सबसे पसंद है! और आज मैं आपको सिखाऊंगा के अगले तीन दिन और तीन रात आपलोग बिंटान में कैसे 'रॉक' करे!! माइकेल विल टीच यू हाउ तू रॉक इन बिंटान !!' ऐसी मज़ेदार परिचय से हमलोग काफी उत्साहित और हर्षित हुए। नि:संदेह माइकेलजी को किसी भी पर्यटक के बिंटान के दौरे को खुश-मिज़ाज़ी से शुरू कराना आता था। माइकेलजी के साथ उन्ही की 'स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल' में हमें दो तीन जगह घूमकर शाम तक 'रिसोर्ट' में पहुंचना था। बिंटान पहुँचते पहुँचते करीब ग्यारह बज रहे थे और ऑयल इंडिया लिमिटेड के कार्यालय समय-सूची के भोजन अवकाश के हिसाब से हमारे दोपहर के खाने का वक्त हो रहा था। शायद हमारे उतरे हुए चेहरों से इसी बात का आभास करते हुए बुद्धिमान माइकेलजी हमें पहले 'लागोई प्लाजा' नामक एक बड़े व्यवसायिक क्षेत्र में ले गए। 'टर्मिनल' से 'प्लाजा' की दूरी करीब 10 मिनट में तय हुई। रास्तों में गाड़ियां काफी कम चल रहीं थी और चारों तरफ समुद्र के मनमोहक नज़ारों को देख हमलोग अचंभित रह गए की ऐसी जगह में तो पर्यटकों की बड़ी भीड़ होनी चाहिए थी। 'लागोई प्लाजा' क्षेत्र में कई बड़े भोजनालय, व्यावसायिक प्रतिष्ठान और 'ट्रिक ऑय' नामक एक संग्रहालय भी है। दोपहर का खाना हमारे बिंटान पर्यटन 'पैकेज' में अन्तर्विष्ट था। बिंटान के स्थानीय पाक-प्रणाली से प्रस्तुत वो स्वादिष्ट भोजन हमें हमेशा याद रहेगा। खाने के बाद भोजनालय में ही 'आइसक्रीम' के 'पार्लर' को देख के हमने वो भी 'आर्डर' किया और एक अच्छा सबक तब मिला जब तीन 'आइसक्रीम' के बदले करीब तीस सिंगापुर डॉलर (करीब 1600 भारतीय रुपए) हमको खर्च करने पड़े। 'बिल' देते वक्त हमें 'वेटर' ने मुस्कुराकर कहा 'महोदय, 'आइसक्रीम' आपके 'पैकेज' में नहीं है'। पाठकों को शायद हँसी आये, लेकिन ये सबक हमारे लिए एक प्रकार से अच्छा भी था क्योंकि वहाँ पहुँचते ही हमें ये एहसास हो गया था की बिंटान द्वीप बाकी इन्डोनेशियाई पर्यटन स्थलों जैसा सुलभ नहीं होने वाला। हमें धीरे धीरे ये भी आभास हुआ के सिंगापुर के मुकाबले बिंटान में सभी चीज़ों का मूल्य दोगुनी या तिगुनी है। शायद इसीलिए लोगों को अगर इन्डोनेशियाई पर्यटन स्थलों की सैर करनी होती हैं, तो ज्यादातर लोग तुलनात्मक रूप से अल्प मूल्य के विकल्प जैसे की 'बाली' इत्यादि का चयन करते हैं। जेब में अपने बटुवे को और थोड़ा कसके मैं गृहस्थी समेत हमारे दूसरे पड़ाव की ओर चल पड़ा, जो पास में ही 'लागोई प्लाजा' के पहली मंज़िल पर था।

'ट्रिकऑय' संग्रहालय एक छोटा मगर देखने लायक आकर्षण - केंद्र है। हमारी 6 साल की बेटी को वो बहुत पसंद आया और उसके आनंद से ज्यादा हमारे लिए कुछ ज़रूरी नहीं था। संग्रहालय में त्रिविम(थ्रीदी)समष्टिओं के अभिनव व्यवहार का प्रदर्शन किया गया है और साथ ही कुछ ऐसे कक्षाओं का निर्माण किया गया है जहां हर सामान उल्टा लटकाकर प्रदर्शन किया गया है। दक्षिण पूर्वी एशिया में ऐसे कईं संग्रहालय हैं जिन्हे 'आप-साइड डाउन हाउस' के नाम से भी जाना जाता है। शिशुओं को अपनी ओर आकर्षित करने की हर चीज वहाँ मुहैया कराई गयी है। 'लागोई प्लाजा' में बिताए उन पलों में हमें फिर ऐसा लगा जैसे की बिंटान किसी भी रूप में पर्यटकों के हलचल से विचलित जगह नहीं है। हमारे अलावा वहाँ सिर्फ मुट्ठी भर सैलानी ही नज़र आये। ये बात दरअसल हमें बहुत अच्छा भी लगा। हम ऐसे ही एकांत की तलाश में जो थे!!

पर ये एकांत ज्यादा समय हमारे साथ नहीं रहने वाला था। माइकेलजी हमें बिंटान में स्थित सबसे बड़े मनोरंजन उद्यान 'ट्रेज़रबे' में ले गए जो हमारे लिए करीब तीन घण्टे का पड़ाव था। 'ट्रेज़रबे' रियाओ द्वीप समूहों में सबसे बड़ा मनोरंजन उद्यान है और इसका 800 मीटर की लम्बाई वाला तरणताल एशिया का सबसे लंबा नमकीन पानी वाला तरणताल माना जाता है। जी हां, आपने सही पढ़ा। वो तरणताल 800 मीटर की लम्बाई वाला ही था!! वैसे वहां के लोग उसे पूरे विश्व का सबसे लंबा तरणताल बताते हैं। लेकिन हम वहाँ वैसे भी कोई तर्क या प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता में भाग लेने तो गए नहीं थे। जो देखने को मिला, वो हमें चौकाने के लिए काफी था! 'ट्रेज़रबे' अपने आप में एक हैरतअंगेज़ जगह है जिसमें 'डर्ट बाइकिंग' से लेकर उस लम्बे तरणताल में तैराकी तक आप कुछ भी कर सकते है। बच्चों को व्यस्त रखने के लिए भी उस तरणताल में 'वाटर गेम्स' के साथ साथ पास में ही अलग स्थान पर 'वीडियो गेम्स' और अन्य खेलकूद आदि की व्यवस्था भी है। हमारे वहाँ पहुँचने के समय पूरा उद्यान लोगों से भरा हुआ था और जैसे जैसे समय बीतता गया वहां और ज्यादा तादाद में पर्यटकों का आगमन हमें देखने को मिला। करीब 10,000 पर्यटकों की एक साथ उपस्थिति से भी उस तरणताल या उद्यान में जनाकीर्णता का आभास नहीं हुआ। 'ट्रेज़रबे' की विस्तीर्णता का एहसास इसी बात

ने हमें दिलाया। 'गूगल मैप' पर कभी 'Treasure bay Bintan' 'टाइप' करके देखिये। चित्रों से उसकी और ख़ासकर उस तरणताल की विशालता का आभास आपको होगा। तीन घण्टे कैसे गुजर गए हमें पता भी ना चला लेकिन पिछले 4 दिनों में सिंगापुर में हुई भाग दौड़ और सुबह से सिंगापुर से शुरू हुई भ्रमण की थकान हमें अपने उस दिन के अंतिम पड़ाव की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही थी। पाठकों को हम ये बताना उचित समझेंगे की अगर कभी 'ट्रेज़र बे' में आप आये तो एक पूरे दिन की अवधि भी शायद उस उद्यान का आनंद उठाने में कम पड़ जाए। इस लेख से जुड़ी हुई 'ट्रेज़रबे' की तस्वीर भी इसी बात का समर्थन करती है।

आखिरकार सूरज डूबने के चंद मिनट पहले हम लोगों को माइकेलजी ने 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' में उतारा। आते वक्त उन्होंने हमें बिंटान के कई दिलचस्प किस्से सुनाये और वहाँ घूमने के लिए अच्छी जगहों का अता-पता भी बताया। लेकिन उन्होंने यह भी सलाह दी के हमने जिस 'रिसोर्ट' में रहने का फैसला किया है, वो इतना बड़ा है और उसमें मनोरंजन के इतने अलग अलग साधन हैं के हमें शायद उस 'रिसोर्ट' से बाहर आने का मौका तक न मिले। हमें 'रिसोर्ट' में प्रवेश तक इस बात का सही तरीके से आभास नहीं हुआ था। लेकिन जब 'रिसोर्ट' के मूल प्रवेश द्वार से करीब तीन किलोमीटर अंदर जाकर ही हमें 'रिसोर्ट' के मूल अभिवादन केंद्र एवम 'रिसोर्ट' के अतिथियों के मूल निवास स्थान की झलक मिली, तब जाकर मस्तिष्क में दस्तक हुई की हम किस जगह से परिचित हो रहे हैं। बिंटान द्वीप का सबसे बड़ा पर्यटन आवास 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' 300 हेक्टर से भी ज्यादा भूमि में स्थापित है। 'रिसोर्ट' के मूल आवास-गृह से लेकर पीछे बने तरणताल और उस के ठीक पीछे ही संग्लग्न समुद्री तट का नज़ारा देख ने लायक लेकिन 'रिसोर्ट' की असली विशालता का एक छोटा नमूना मात्र है। 'रिसोर्ट' के उस पहले नज़ारे का एहसास शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। पर्यटक आजकल किसी भी जगह को अपनी भ्रमण सूची में शामिल करने से पहले, रहने और खाने का सबसे अच्छा प्रबंध कहाँ किया जाए उसकी खोज में लग जाते हैं। कई बार ऐसा होता है कि 'होटल बुकिंग वेबसाइट्स' में कुछ चीज़ें बढ़ा चढ़ाकर दिखाई जाती हैं। परन्तु पूर्व निर्धारित जगह पहुंचने पर लोगों को कई बार कड़वे असलियत का सामना करना पड़ता है और वो खुद को वंचना का शिकार मानने लगते है। लेकिन पहली बार हमें ऐसा लगा की कोई भी 'होटल बुकिंग वेबसाइट' किसी पर्यटन केंद्र ये पर्यटन आवास के वैभव को सही तरीके से दर्शा नहीं पायी है। पूरी तरह से अपक्षपाती समीक्षक के रूप में, मैं फिर कहना चाहूंगा के अगर आप 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' कभी आये तो ये आपके लिए एक अद्वितीय तजुर्बे के रूप में ज़िन्दगी भर आपके साथ रहेगा। 'रिसोर्ट' के पहले नज़ारे को निहारते हुए हमें वक्त का थोड़ा भी तकाज़ा न रहा और करीब 45 मिनट के बाद अभिवादन केंद्र के हंसमुख युवा अभिवादक श्रीमानज़ी को हमें अभिवादन 'काउंटर' पर मानो घसीटते हुए लेके आना पड़ा। उन्होंने हमें बताया के नज़ारो का लुफ्त उठाने के लिए पूरी शाम और रात हमारे पास होगी, लेकिन पहले हमें नौका 'टर्मिनल' से लाये हुए अपने सामान की शिनाख्त करके अपने कक्षों की चाबियां हासिल करनी है और कक्ष में दाखिल हो के उन्हें आश्वासित करना है की कक्ष हमारे लिए उपयुक्त है।

हमारे लिए निर्धारित किया गया कक्ष समुद्र तट के सामने ही था जहां से पूरे 'रिसोर्ट' के तरणताल, बच्चों के खेलने का उद्यान और तट इत्यादि के सारे नज़ारे देखे जा सकते थे। समुद्र तट पर बिंटान की वह पहली शाम यादगार रही। अभिवादन केंद्र के पास में ही स्थित सूचना केंद्र से हमें पता चला की 'रिसोर्ट' दरअसल 6 अलग अलग होटलों का एक समूह है जिसे 'निर्वाणा रिसोर्ट' की प्रबंधन मंडली के द्वारा परिचालित किया जाता है। 'रिसोर्ट' में दो हज़ार से भी ज्यादा कर्मचारी अतिथियों की निरंतर सेवा में कार्यरत हैं। 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' इसी समूह का सबसे बड़ा 'होटल' है जिसमें सबसे ज्यादा अतिथियों को एक साथ रखा जा सकता है। निर्वाणा गार्डन के बगल में ही स्थित है उस समूह का दूसरा सदस्य 'बाण्यूबीरु विल्ला'। ये दुमंजिला इमारतों का एक गुट है जहां हर इमारत रोजमर्रा की ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी हर साज़ो सामान से सुसज्जित है। अगर आप संयुक्त परिवार के साथ बिंटान के दौरे पर हैं या आप के गुट में 8-10 सदस्य हैं, तो आप 'होटल' के बजाय इन 'विल्ला' ओं में रह सकते हैं। हर 'विल्ला' में अत्याधुनिक रसोई भी मौजूद है जिसमें आप चाहें तो अपना खाना खुद बना सकते हैं। इन 'विल्ला' ओं के निवासियों के लिए अलग से तरणतालों की व्यवस्था है, लेकिन 'निर्वाणा गार्डन' के निवासी और 'बाण्यूबीरु विल्ला' के निवासी एक दूसरे के लिए आरक्षित तरणतालों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इनके अलावा इस 'रिसोर्ट' समूह के दो और सदस्य 'मायांगसारी रिसोर्ट' और 'निर्वाणा बिच क्लब' करीब 1 किलोमीटर की दूरी पर है। जल क्रीड़ा के लिए अत्यंत उत्साही पर्यटकों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है 'निर्वाणा बिच क्लब'। समुद्र तट से संलग्न इस 'होटल' में अलग अलग बनी हुई कक्षों को तटों में अक्सर देखी जानेवाली झुग्गीओं जैसा बाहरी रूप दिया गया है जो अंदर से किसी भी अत्याधुनिक 'होटल' कक्ष से तुच्छ नहीं है। यहां से संलग्न समुद्री तट में हर तरह के जलक्रीड़ा का प्रबंध है। ये बात ध्यान देने योग्य है की 'निर्वाणा बिच क्लब' के संलग्न तट के अलावा 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' में किसी और जगह जल क्रीड़ा का कोई आधारभूत सुविधा नहीं है। 'मायांग सारी रिसोर्ट' तुलनात्मक रूप में हमें 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' से महंगा अनुभव हुआ। एकांत में लिपटा हुआ 'मायांग सारी' का हर कमरा समुद्र तट के बिल्कुल सामने था। 'रिसोर्ट' के कार्यकर्ताओं ने हमें बताया की मधुयामिनी के लिए अक्सर पर्यटक 'मायांग सारी' का ही चयन करते हैं। वहाँ के भोजनालय में पारम्परिक भारतीय खाद्य का दबदबा था, जिसके बारे में हम थोड़ी देर बाद अलग से चर्चा करेंगे। 'मायांग सारी' से करीब आधे किलोमीटर की और दूरी तय करके 'निर्वाणा रिसोर्ट' समूह के सबसे महंगे और उत्कृष्ट निवास

की स्थिति हमें दिखाई दी। 'इन्द्र माया' और 'सीरी' नामक इन दोनों निवासों में कुछ रात बिताने के लिए अपने बटुवों का बहुत भारी होना अत्यंत आवश्यक है। 'विल्ला' की आकृति में बनाये गए ये निवास अपनी अपनी व्यक्तिगत तरणतालों से सज्जित है और यहां के निवासिओं को पूरे 'रिसोर्ट' में सबसे ज्यादा एकांत में समुद्र तट का लुफ्त उठाने के लिए व्यक्तिगत इलाका दिया जाता है। इन बातों को जान कर हमें ये एहसास हुआ की 'रिसोर्ट' की परिचालन मंडली, 'रिसोर्ट' के हर कोने को एक विशिष्ट चरित्र देना चाहती है। अलग-अलग पर्यटकों के अलग-अलग रुचिओं को देखते हुए अलग-अलग तरह के मनोरंजन के साधनों को हर संभव पृथक रखा गया है और एक स्वभाव के पर्यटक को दूसरे स्वभाव के पर्यटक से एकान्तता दी गयी है। लेकिन बच्चों के मामले में ये सबको पता है के बच्चा किसी भी देश या जाति का हो उसके मनोरंजन के लिए साधन लगभग एक जैसे ही होंगे। शायद इसी बात को ध्यान में रखकर उस 'रिसोर्ट' में बच्चों के खेलने के लिए एक सभा-गृह के आकार के कक्ष की सिर्फ एक केंद्रीय व्यवस्था की गयी है जहां 1 साल से 8-9 साल के बच्चों के खेलने की हर संभव साधन की उपस्थिति है। 'रिसोर्ट सेण्टर' नामक उस क्षेत्र में एक बहुत बड़ा 'बाउलिंग' क्रीड़ा कक्ष भी है। संलग्न कक्ष में 'टेबल टेनिस' और 'बिलियर्ड्स' जैसी 'इनडोर' खेलों की सुविधा मुहैया कराई गयी है। 'आउटडोर' खेलों और अन्य साधनों के मामलों में 'रिसोर्ट सेंटर' से ही संलग्न तीरंदाज़ी केंद्र और निशानेबाज़ी के अभ्यास स्थान का भी प्रबंध है। मछली पकड़ने के शौकीन लोगों के लिए निकटवर्ती तालाब और घोड़ों से आकर्षित व्यक्तिओं के लिए घोड़ा गाड़ियों के सवारी का भी विकल्प है। आपके पर्यटन 'पैकेज' के बाहर के हर अतिरिक्त मनोरंजन की अलग-अलग मूल्य निर्धारित है जिसका भुगतान आप किसी भी प्रकार से कर सकते है। नकदी भुगतानों के लिए सिंगापुर डॉलर या अमरीकी डॉलर के बदले इन्डोनेशियाई रूपये का लेनदेन इस 'रिसोर्ट' में लाभदायक नहीं है। क्रेडिट कार्ड या इंटरनेशनल डेबिट कार्ड ही बिंटान द्वीप में किसी भी व्यय के भुगतान का सर्वोत्तम तरीका है।

इस पूरे 'रिसोर्ट' समूह इलाके में आपके स्वाद कलिकाओं को संतुष्ट करने हेतु 6 अलग जलपान और भोजनगृहों की व्यवस्था है। हमारे 'रिसोर्ट' में ठहरने के उन तीन दिनों में हमने ये सुनिश्चित किया कि हम लोग हर भोजनालय में व्यंजनों का स्वाद चखेंगे। क्या पता फिर वहाँ आने का मौका मिले या न मिले!! 'नर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' के अभिवादन कक्ष वाले 'होटल' में ही तीन अलग अलग सुविधाएं 'डाइनोबिस्ट्रो', 'डापूल साइड' और 'डा नीडल्स हाउस' के रूप में उपलब्ध हैं। 'डा नीडल्स हाउस' चीनी खाद्य के शौकीन लोगों को शिकायत का मौका नहीं देगी। पहले ही वर्णित 'मायांग सारी रिसोर्ट' में भारतीय रंधन शैली को पसंद करनेवाले लोगों के लिए 'स्पाइस रेस्टोरेंट' नामक भोजनालय की व्यवस्था है। सभी 'होटलों' से अलग और एकांत में स्थित है पांचवा भोजनालय 'डा हॉट पॉट ऐसियान ग्रील' जो कोयले में भुने हुए हर प्रकार के मांसाहारी और शाकाहारी व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन हमें व्यक्तिगत रूप में जो भोजनालय सबसे पसंद आया वो था वहाँ का छठा और आखरी विकल्प 'केलोंगसी फूड रेस्टोरेंट'। पूरे विश्व में समुद्री तटों पर या फिर तट के पास में पानी के ऊपर ही बनाये गये सबसे आकषर्क और समुद्री मांसाहारी खाद्यों के सबसे बेहतर भोजनालयों में शायद ये स्थान नि:संदेह पहले 10 स्थानों में गिना जायेगा। सर्वोतकृष्ट समुद्री मछली, केंकरा या झींगा मछलिओं के स्वादिष्ट व्यंजनों का यहां आप आनंद ले सकते हैं। चारों तरफ समुद्र से घिरे इस भोजनालय का सही माहौल वहाँ शारीरिक रूप से उपस्थित होकर ही अनुभव किया जा सकता है। भोजनालय के मूलगृह से करीब सौ मीटर दूर, समुद्र के बीचों बीच 'केलिप्सो फ्लोटिंग बार' नामक एक मधुशाला की व्यवस्था है जो सिर्फ एक लकड़ी के संकीर्ण सेतु से भोजनालय से संयोजित है। ये दृश्य सच में देखने लायक है जिसकी एक झलक इस लेख के साथ संग्लग्न की गयी है।

इस 'रिसोर्ट' में उपलब्ध सभी सेवाओं में सबसे उपयोगी सुविधा है एक बस सेवा जो हर आधे घंटे में 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' के मूल 'होटल' से शुरू होकर वही पे ख़त्म होती है। रास्ते में वो बस सेवा, हर भोजनालय, सदस्य 'होटल' और मनोरंजन केंद्र में पर्यटकों को चढ़ाती या उतारती है। सुबह से लेकर देर रात तक चलनेवाली ये सेवा पर्यटकों के लिए मुफ्त में उपलब्ध है और 3 / 4 दिन 'रिसोर्ट' में समय बिताने आये लोगों को 'रिसोर्ट' के हर मनोरंजन का लाभ उठाने के लिए सहायक साबित होती है। कोई भी सेवा या सुविधा, चाहे वो मुफ्त हो या महंगा, 'रिसोर्ट' ये सुनिश्चित करता है की अतिथियों को सर्वोत्तम संतुष्टि की प्राप्ति हो।

सच में 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' और बिंटान द्वीप एक सुकून देने वाला अनुभव रहा। तीन विलासमय दिन व्यतीत करने के पश्चात, 'रिसोर्ट' की बस सेवा में जब हम वहाँ से विदा होकर 'बान्दार बेंटान तेलानी' नौका 'टर्मिनल' की ओर अग्रसर हुए, तब हमारा ह्रदय दु:ख, सुख और इच्छा की कुछ अजीब सी मिश्रित अनुभूतिओं में तैर रहा था। दु:ख इस बात का था की हमें शायद वहां कुछ दिन और गुजारना चाहिए था, सुख इसलिए मिला क्योंकि हमने अपना गंतब्य स्थल एकदम सही चुना और इच्छा ये हुई की हम नि:संदेह वहाँ फिर किसी दिन सुकून की तलाश में लौट के आएं। सुकून ही वो एकमात्र चीज थी जिसे बिंटानद्वीप और 'निर्वाणा गार्डन रिसोर्ट' ने हमें जी भर के एहसास करने का मौका दिया। किसी भी पर्यटन स्थल के लिए इससे बड़ी प्राप्ति और क्या हो सकती है। हम बिंटान ज़रूर वापिस जाना चाहेंगे और उस सुकून को फिर से अनुभव करना चाहेंगे। हमारी अर्धांगिनी ने नौका 'टर्मिनल' में पहुँचते ही कानों में फुसफुसा के पूछा 'क्या निर्वाणा का मतलब सुकून भी हो सकता है??' मैंने मुस्कुराकर कहा 'पहले शायद नहीं भी था, लेकिन अब है!!' ❑

बाली द्वीप – हर किसी का गंतव्य स्थल

✍ **रितेश मोहन जोशी**
उप महाप्रबंधक (भूभौतिकी)
भूभौतिकी विभाग, काकीनाड़ा

जब आप बाली का नाम सुनते हैं, तो पहली बात जो मन में आती है, वह है खुशी, और ठीक भी है, इसलिए कि इंडोनेशिया के बाली नामक द्वीप हर किसी को, हर उम्र को, कुछ न कुछ प्रदान करने की क्षमता रखता है। फिर वो समुद्र तट पे बितायी जाने वाली छुट्टियां हो, नवदंपत्ति की शादी के बाद की छुट्टी, परिवार के साथ मनाई जाने वाली छुट्टी, सर्फिंग, स्नोर्केलिंग, डॉल्फिन के साथ तैरना आदि गतिविधियां हो, तीर्थयात्रा, मंदिरों के दर्शन, स्पा–चिकित्सा, या फिर संस्कृति को देखने की ललक हो, ऐसी हर एक चीज़ की मेजबानी कर सकता है बाली। यदि कोई इन सभी आकर्षणों का आनंद प्राप्त करना चाहता है, तो एक महीने का प्रवास भी कम है। हालांकि, बाली के इन सभी आकर्षण का अन्वेषण करने का सबसे अच्छा तरीका इस बात पर आधारित है कि आपको सबसे अधिक क्या उत्साहित या आकर्षित करता है।

जनवरी, फरवरी 2016 की बात है जब हमारा परिवार बाली दर्शन को निकला हमारे सात दिनों का दौरे में हमें क्या करना है, यह पूर्णतया स्पष्ट था। प्रत्येक दिन की यात्रा का कार्यक्रम को स्पष्ट रूप से तैयार किया गया था। जो हम देखना चाहते थे, उन सभी स्थानों की एक सूची बनाई गयी थी और तदनुसार दैनिक योजना बनाई गयी थी। हमारी यात्रा में मंदिरों की यात्रा शामिल / संलग्न थी ताकि माता–पिता को आनंद की अनुभूति हो, कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी सूचीबद्ध किया था ताकि मेरे और मेरी धर्मपत्नी के अंदर का कलाकार संतुष्ट हो सके और समुद्रतट पे की जाने वाली जल क्रीड़ाए, जैसे कि, स्नोर्केलिंग, सर्फिंग आदि जैसी कुछ गतिविधियों जिससे बच्चों को व्यस्त रखा जा सके और उन्हें ये ना लगे इस यात्रा मे उनकी आनंद प्राप्ति के लिए कुछ नहीं था ।

यह यात्रा वृत्तांत हालांकि केवल बाली के नृत्यों के लिए समर्पित है।

कई नृत्य रूप हैं जिनका मूल बाली ही हैं। उनमें से कुछ प्रसिद्ध नृत्यनाटिका का रूप हैं जिन्हें हमने देखा, जैसे की कीचक नामक नृत्य। यह एक बहुत ही रोमांचकारी एवं प्रसिद्ध नृत्य है और अधिकांश पर्यटकों के कार्यक्रम में सम्मिलित होता है। दूसरा नृत्य लेगॉन्ग नृत्य है जो हाथों की जटिल मुद्राओं के साथ किया जाता है। तीसरा नृत्य बोरोंग नृत्य है। यह एक ऐसा नृत्य है, जो सुबह के समय में रचा जाता है। लेगॉन्ग और बोरोंग ऐसे दो नृत्य है जिनमें उपस्थिति वो ही दर्ज़ कराते हैं, जिनकी नृत्य या नाट्य–कला में विशेष/ वास्तविक रुचि होती है।

शाम का समय है, सूरज धीरे धीरे ढल रहा है, उलूवातु नाम का मंदिर है, दर्शन हो चुके हैं, अब समय है चट्टान पे बने हुए एक अखाड़े में बैठने का, बिलकुल आप चट्टान पे बैठे हैं, सैकड़ों फ़ीट नीचे समुद्र की लहरें चट्टान से टकरा के एक अलग ही अनुभूति प्रदान कर रही है, धीरे धीरे सूरज अपनी लालिमा छोड़ रहा है, इंतज़ार है बस सूरज ढलने का, नहीं, इंतज़ार है एक नृत्य–नाटिका का जो कुछ ही पलों में खेली जाएगी इसी अखाड़े में 1000 – 1200 पर्यटकों ने सीट में बैठना शुरू कर दिया हैं। सभी पारंपरिक पोशाक में 70 – 75 लोगों के समूह का इंतजार कर रहे हैं जो रामायण पर आधारित एक नाटक खेलने जा रहे हैं। जी हाँ, बिलकुल सही है, राम के 14 साल के वनवास में जाने की कहानी, रावण द्वारा सीता हरण करने की कहानी, हनुमान द्वारा लंका को जला देने की कहानी और दो सेनाओं के बीच अंतिम युद्ध और सीता को सुरक्षित वापस लाने की कहानी। इस पूरी पौराणिक गाथा को कीचक नृत्य के नाम से जाना जाता है। यह नृत्य उन पुरुषों के सहगान के बारे में है जो बंदरों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और लगातार 'चक', 'चक', 'चक', 'चक' सहगान कर रहे हैं और इसलिए इस नृत्य का नाम कीचक रखा गया है। हर नृत्य के अपने कुछ क्षण होते हैं और मेरे पसंदीदा दो पल हैं, एक जब हनुमान अपने पूर्ण गेटअप में अचानक दर्शकों के पीछे से आते हैं और फिर यहां–वहां कूदते हैं और अंत में दर्शकों के साथ एक सेल्फी लेते हैं। इससे दर्शकों को अपना दिल बहलाने का मौका मिलता है। दूसरा पल भी हनुमान से सम्बंधित हैं। पुराने, सूखे हुए भूरे रंग के कई सारे नारियलों को एक वृत्त के आकार में रखा जाता है और फिर उनके ऊपर मिट्टी का तेल डाला जाता है और आग लगायी जाती है। यह लंका दहन का द्योतक है। तत्पश्चात नृत्य नाटक का वह हिस्सा आता है जब हनुमान इन जलते हुए नारियल के गोलों के साथ पादाहत–कन्दुक–क्रीडा (फुटबॉल)खेलना शुरू करते हैं जो निकटवर्ती क्षेत्र में आसन ग्रहण किये दर्शकों के लिए थोड़ा खतरनाक है। इस कार्यक्रम की शुरुआत सूरज ढलने के साथ होती है और सूरज डूबने के लगभग साथ साथ यह नृत्यनाटिका भी समाप्त हो जाती है।

दूसरा नृत्य जो हमने देखा, वह लेगॉन्ग नृत्य है। यह एक महल जिसे उबूद महल कहा जाता है में प्रदर्शित किया जाता है। उंगली और हाथ की मुद्रायें, पाँव का धीरे धीरे फर्श पे थिरकना और चेहरे की अभिव्यक्ति तथा हावभाव है जो इसे दूसरे किए जाने वाले नृत्यों से अलग करता है। यह नृत्य थोड़ा बहुत उत्तर–पूर्वी भारत में किये

जाने वाले नृत्यों से थोड़ा मिलता जुलता है, खासकर उंगली और हाथ की मुद्राओं में काफी समानता है।

लेगॉन्ग नृत्य काफी लंबा होता है और इसका आनंद लेने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। रंगीन कपड़े, सर में फूलों से सुस्सजित मुकुट, खूब सारा सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग, वाद्य यन्त्र और सीधे प्रसारित संगीत से सुस्सजित मंच की आभा देखते ही बनती है लेगोंग गाथा है एक राजा के वीरता पूर्ण प्रेम की, कि कैसे राजा से बच के एक कन्या जंगल की तरफ भागती है, राजा उसे ढूंढने जंगल की तरफ जाता है। वह उसे कैद कर लेता है और एक राक्षसी रैवेन द्वारा हमला किए जाने पर परिवार से लड़ने के लिए तैयार हो जाता है, जो उसकी मौत की भविष्य वाणी करता है। नृत्य की समाप्ति वाद्ययन्त्र से निकलने वाली तेजगति की ध्वनि एवं उतना

ही तेज नृत्य(क्रेसेंडो) द्वारा होती है।

पर्यटन के तौर पे हमारा तीसरा और अंतिम नृत्य बोरोंग नृत्य था।

बोरोंग एक तेंदुए जैसा प्राणी है और 'आत्माओं का राजा' या 'जंगल का स्वामी' या बाली के गाँवों के ''जादुई रक्षक'' के रूप में जाना जाता है, जो अच्छों का साथी और बुराई (रंगदा) का दुश्मन है। बोरोंग नृत्य में कभी न खत्म होने वाली लड़ाई को दर्शाया गया है जो एक एक विशाल शेर की पोशाक में बोरोंग द्वारा चित्रित और दुष्ट, राक्षसी चुड़ैल रंगदा द्वारा चित्रित के बीच किया गया है।

यह नृत्य प्रदर्शन प्रात:काल में होता है, 45 मिनट से एक घंटे का कार्यक्रम है और लेगॉन्ग नृत्य जितना लंबा नहीं। बोरोंग नृत्य के प्रदर्शन के दौरान, रंगदा नृत्य भी किया जाता है। रंगदा बुराई का प्रतीक है, जबकि बोरोंग पुण्य को व्यक्त करता हैं, इसलिए, प्रत्येक बोरोंग नृत्य प्रदर्शन रंगदा नृत्य प्रदर्शन के साथ होता है। इसका कारण यह भी है कि यह धार्मिकता और बुराई के बीच शाश्वत अंतर को दर्शाता है। नृत्य प्रदर्शन के बाद, दर्शकों को बोरोंग (शेर की पोशाक में) के साथ एक तस्वीर रखने की अनुमति दी जाती है।

सभी नृत्य में एक समान विषय था, जो सभी देशों की संस्कृतियों में पाया जाता है। असत्य पे सत्य की विजय। अधर्म पे धर्म की विजय। बुराई पे अच्छाई की विजय। मानवता के लिए ये वास्तविक सन्देश हमें विभिन्न संस्कृतियों में, विभिन्न देशों में, विभिन्न भाषाओं में दिखाई देता है, सुनाई देता है।

सात दिन तो यूं उड़नछू हो गए, काम पर लौटने का समय हो गया था। लेकिन तय किया कि चूंकि कुआलालम्पुर से बाली दूर नहीं है, मैं वापस जाऊंगा और इस बार कुछ और अन्वेषण करूँगा। मैं अभी भी दिल से उस ध्वनि की प्रतीक्षा कर रहा हूं; वह ध्वनि 'चक', 'चक', 'चक', 'चक'। मेरे कानों को इस ध्वनि की प्रतीक्षा है। ❑

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान की 36वीं बैठक संपन्न

दिनांक 30 जनवरी, 2020 को ऑयल इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (नराकास) दुलियाजान की 36वीं बैठक संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता ऑयल के श्री दिलीप कुमार भूयाँ, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) एवं उपाध्यक्षता श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी) ने की। बैठक में राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि एवं विशेष अतिथि के रूप में श्री भास्कर बाबू, उप निदेशक (प्रशिक्षण), डिब्रूगढ़ भी उपस्थित थे। दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के सदस्य कार्यालयों ने इस बैठक में अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की।

अध्यक्ष की अनुमति के पश्चात बैठक प्रारंभ हुई। इस बैठक में सदस्य कार्यालयों के साथ (1) राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2019-20, (2) धारा 3(3) का अनुपालन, (3) राजभाषा नियमों का अनुपालन (द्विभाषी सामग्री के विशेष संदर्भ में), (4) ई-मैगजीन के प्रकाशन पर विचार-विमर्श, (5) ऑनलाइन तिमाही रिपोर्ट का प्रेषण पर चर्चा एवं सुझाव, (6) विगत वर्ष की तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा, (7) हिन्दी प्रशिक्षण एवं हिन्दी कार्यशाला के आयोजन पर विस्तृत चर्चा की गई।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, ऑयल ने विभिन्न कार्यालयों से पधारे सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से राजभाषा के कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला और विशेष करके कार्यालयों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा की, और सदस्य कार्यालयों से आग्रह किया कि वे अपने तिमाही प्रगति रिपोर्ट को ऑनलाइन भरने का प्रयास करें। रिपोर्ट भरने में अगर कोई समस्या आए, तो सदस्य कार्यालय, नराकास कार्यालय में या फिर राजभाषा विभाग से संपर्क कर सकते हैं। कार्यरत कार्मिकों की संख्या के आधार पर लघु कार्यालयों के प्रतिनिधियों से आग्रह किया गया कि वे प्रत्येक तिमाही में जो रिपोर्टें अपने क्षेत्रीय/आंचलिक कार्यालय को भेजते हैं उसी की एक प्रति समीक्षा के लिए नराकास, दुलियाजान, कार्यालय को भी भेजने की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

वीबीएफसीएल के राजभाषा अधिकारी श्री अहिन्द्र तालुकदार ने अपने संस्थान द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन के बारे में जानकारी दी। इसी क्रम में भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री महेश जी ने भी अपनी बात रखी और अपने बैंक एवं अन्य राजभाषा गतिविधियों से सदस्यों को परिचित कराया।

हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, डिब्रूगढ़ से पधारे श्री भास्कर बाबू, सहायक निदेशक (प्रशिक्षण) ने सभी का स्वागत एवं अभिवादन करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा चलाये जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की और नामांकन के लिए सदस्य कार्यालयों को प्रोत्साहन के साथ-साथ प्रशंसा भी की। ऑयल द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों एवं बैठकों की उपस्थिति एवं प्रबंधन के लिए उन्होंने ऑयल प्रबंधन को राजभाषा विभाग की ओर से धन्यवाद भी ज्ञापित किया।

बैठक के उपाध्यक्ष श्री त्रिदिव हजारिका ने सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि हमें अधिक से अधिक कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने का प्रयास करना चाहिए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री दिलीप कुमार भूयाँ, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) ने कहा कि आज की बैठक में अनुपस्थित कार्यालय को नियमित रुप से बैठक में हिस्सा लेने हेतु पत्राचार किया जाए। अध्यक्ष महोदय ने सभी से आग्रह किया कि आप सभी अपने-अपने कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने वाले कार्मिकों को प्रोत्साहित करें जिससे कि हम हिंदी में अपना अधिक से अधिक कार्य कर सकें।

डॉ. त्रिपाठी, सदस्य सचिव, नराकास, दुलियाजान के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 36वीं बैठक समाप्त हुई।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ऑयल दुलियाजान की तिमाही बैठक संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन को सुनिश्चित करने हेतु गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 29 जनवरी, 2020 को ऑयल के क्षेत्रीय सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता श्री दिलीप कुमार भूंया, मुख्य महाप्रबधक- जन संपर्क (विभागाध्यक्ष) ने की। बैठक में समिति के सचिव श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी) के साथ सदस्य-सचिव डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी भी उपस्थित थे। इस बैठक में ऑयल के विभिन्न विभागों में गठित उप-समितियों के राजभाषा अधिकारी भी चर्चा-परिचर्चा के लिए उपस्थित थे।

इस बैठक में क्षेत्र मुख्यालय के विभिन्न विभागों में नामित राजभाषा अधिकारियों ने अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की। बैठक में उपस्थित राजभाषा अधिकारियों के साथ (1) धारा 3(3) का अनुपालन (2) राजभाषा नियम 5 एवं 11 का अनुपालन (3) तिमाही प्रगति रिपोर्ट का प्रेषण, प्राप्ति एवं समीक्षा (4) क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में राजभाषा कार्यान्वयन पर विचार-विमर्श पर विस्तृत चर्चा की गई। डॉ. त्रिपाठी ने धारा 3(3) के अनुपालन एवं नियम 5 और 11 पर विस्तृत चर्चा की । क, ख एवं ग क्षेत्रों में हिंदी में होने वाले पत्राचार की यथास्थिति पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न मुद्दों के साथ क्षेत्र मुख्यालय के विभिन्न विभागों में इसके कार्यान्वयन को लेकर हो रही कठिनाइयों पर भी विस्तृत चर्चा की गई। उपस्थित अधिकारियों से चर्चा-परिचर्चा के साथ उनका समाधान भी सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया।

सभी विभागों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर विस्तृत चर्चा की गई तथा विभिन्न मुद्दों पर हो रही कठिनाइयों के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी। जिन विभागों से रिपोर्टें प्राप्त नहीं हुई हैं उन सभी से आग्रह किया गया कि वे तिमाही प्रगति रिपोर्ट का यथासमय प्रेषण सुनिश्चित करें जिसमें की क्षेत्र मुख्यालय द्वारा वार्षिक समीक्षा के उपरान्त प्रदान की जाने वाली अंतर विभागीय राजभाषा शील्ड के लिए योग्यता सुनिश्चित की जा सके।

सचिव, श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी), ऑयल ने राजभाषा में हो रहे उत्कृष्ट कार्यों की सराहना की। सभी से आग्रह किया कि इसकी गति को और बढ़ाया जाए। इसके अलावा सरलीकरण की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि भाषा की व्यवहारिकता में सहज-सरल पद्धति अपनाने से ही हिन्दी भाषा का और अधिक प्रचार-प्रसार सुनिश्चत किया जा सकता है।

अध्यक्ष, श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक- जन संपर्क (विभागाध्यक्ष) ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी की हो रही प्रगति को इसी क्रम में उत्तरोत्तर विकासमुखी बनाया जाना चाहिए। अंत में उन्होंने सदस्यों को धन्यवाद देते हुए अपनी बात समाप्त की।

डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, ऑयल के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही ऑयल के राजभाषा कर्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक संपन्न हुई।

ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान में हिन्दी माह समारोह 2019 का आयोजन

राजभाषा नीतियों एवं निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करते हुए ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में 04 सितंबर, 2019 से 30 सितंबर, 2019 तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ हिंदी माह समारोह 2019 का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन 04 सितंबर 2019 को जनरल ऑफिस, क्षेत्र सम्मेलन कक्ष में स्वरचित लघु कथा लेखन/स्वरचित कविता लेखन के आयोजन से हुआ। इस दरम्यान विभिन्न वर्गों में अधिकारियों, कर्मचारियों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं यथा- स्वरचित लघु कथा लेखन/स्वरचित कविता लेखन, हिंदी डिक्टेशन (श्रुतिलेख), राजभाषा ज्ञान, हिंदी टिप्पण, आलेखन एवं रिक्त स्थान पूर्ति, क्वीज (प्रश्नोत्तरी) एवं हिंदी स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अलावा दुलियाजान में स्थित विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए भी विभिन्न वर्गों में स्वरचित कविता लेखन, नारा (स्लोगन) लेखन एवं स्वरचित कहानी लेखन का भी आयोजन किया गया। सभी प्रतिभागिताओं के विजेता प्रतिभागियों को डिजिटल माध्यम से पुरस्कार राशि भुगतान किया गया एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इसके साथ ही विद्यार्थियों को राजभाषा अनुभाग तथा विद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से स्कूल में ही आयोजित हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान गणमान्य अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

कोलकाता कार्यालय में कार्मिकों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 23.12.2019 को कोलकाता कार्यालय में कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के अवसर पर श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक, राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार विशिष्ट अतिथि के रूप मे उपस्थित हुए। जबकि कार्यशाला में स्वागत भाषण कोलकाता कार्यालय के महाप्रबंधक श्री ए. रॉयचौधुरी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि कोलकाता कार्यालय सदैव राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के प्रति सदैव गम्भीर रहा है। विगत 6 वर्षों से लगातार नराकास स्तर पर राजभाषा शील्ड हासिल करना इस बात का प्रतीक है। कार्यशाला में शामिल हुए कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए महाप्रबंधक महोदय ने हिंदी कार्याशालाओं की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। श्री एस बी पालरॉय, कार्यपालक निदेशक (ओ.एस.डी) ने इस अवसर पर अपनी बात रखते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी ने राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। आज तकनीक की मदद से हिंदी भाषा में काम करना सरल एवं सुविधाजनक हो चुका है। हम भारतवासियों को इसका लाभ उठाते हुए क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मान देते हुए उन भाषाओं के शब्दों को हिंदी भाषा में शामिल कर इस भाषा को और अधिक विस्तार देना चाहिए। विशेष वक्ता श्री दुबे ने कार्मिकों को राजभाषा नियम अधिनियम के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि यदि कार्मिक अपने कार्य की शुरुआत में रोमन हिन्दी से भी करें तो उन्हें इसके लिए संकोच नहीं करना चाहिए। इससे धीरे-धीरे उनकी हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाओं की उपयोगिता कोलकाता कार्यालय के लिए अधिक है क्योंकि इन कार्यशालाओं में कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी के बारे में जानकारी मिलती है तथा उन्हें हिन्दी में कार्य करने का अभ्यास भी कराया जाता है। प्रसंगित कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों के कुल 15 कार्मिकों ने भाग लिया। कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों को साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा रचित कहानियों की पुस्तक प्रदान की गई। श्री अमोल भट्टाचार्जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

कोलकाता कार्यालय को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यन्वयन के लिए पुरस्कार

दिनांक 29.01.2020 को सम्पन्न हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक एवं राजभाषा समारोह में ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय को वर्ष 2018-19 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए, समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम श्री जगदीप धनकड, राज्यपाल, पश्चिम बंगाल के करकमलों द्वारा प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया। कोलकाता कार्यालय द्वारा कार्यालय के इतिहास में पहली बार प्रसंगित पुरस्कार लगातार प्राप्त करना इसकी विशेष उपलब्धि है।

इसके अतिरिक्त इस महत्वपूर्ण अवसर पर खचाखच भरे सम्मेलन कक्ष में विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के अध्यक्षों, निदेशकों की उपस्थिति में **डॉ वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबन्धक (राजभाषा) को कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का कार्य कुशलतापूर्वक करने के लिए प्रशस्तिफलक भी प्रदान किया गया।** कोलकाता कार्यालय की ओर से कार्यालय के श्री ए. रॉयचौधुरी, मुख्य महाप्रबन्धक (कोलकाता कार्यालय) एवं डॉ वी एम बरेजा, उप महाप्रबन्धक (राजभाषा) ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

स्मरण रहे कि पिछले छ वर्षों से कोलकाता कार्यालय द्वारा यह प्रतिष्ठित पुरस्कार हासिल की जा रही है और यह पहला अवसर है कि उसने प्रथम पुरस्कार ग्रहण किया है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय में हिन्दी पखवारा का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय में दिनांक 01.09.2019 से 15.09.2019 तक हिन्दी पखवारा का आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए कई प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। तत्क्षण आशुभाषण प्रतियोगिता, हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता, हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता, हिंदी पाठ पठन तथा हिन्दी क्विज़ प्रतियोगिता में कार्मिकों नें पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। पखवारा का उद्घाटन एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के साथ हुआ। दिनांक 02.09.2019 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में कुल 15 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में विशेष रूप से श्री निर्मल कुमार दुबे बतौर संकाय उपस्थित हुए। उनके अनुभव का लाभ सभी उपस्थित अधिकारियों नें उठाया। पखवारा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं के नाम तथा समारोह के छायाचित्र संलग्न हैं।

पाइपलाइन विभाग में हिन्दी माह समारोह- 2019 का आयोजन

भारत सरकार के गृह मंत्रालय अंतर्गत राजभाषा विभाग के दिशा-निदेशानुसार कार्यालयीन काम-काज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं लोगों को राजभाषा के प्रति आकृष्ट करने के उद्देश्य से 01 सितम्बर, 2019 से पाइपलाइन विभाग में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिन्दी माह समारोह, 2019 का भव्य आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ 03 सितम्बर, 2019 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब में हिन्दी माह समारोह-2019 का उद्घाटन एवं राजभाषा संगोष्ठी के आयोजन से हुआ, जिसमें उक्त अवसर पर गुवाहाटी विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष (हिन्दी) डॉ. दिलीप कुमार मेधी मुख्य अतिथि एवं हिन्दी सेंटिनल के सम्पादक श्री अरूण कुमार झा सम्मानित अतिथि के तौर पर आमंत्रित थे। कार्यकारी निदेशक (पाला सेवाएं) श्री समीर कुमार दास तथा आमंत्रित अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी माह समारोह- 2019 का विधिवत् उद्घाटन किया। ''बदलते परिवेश में राजभाषा हिन्दी का महत्व'' शीर्षक पर आयोजित राजभाषा संगोष्ठी में आमंत्रित अतिथि द्वय ने अपने सारगर्भित विचारों से सभागार में उपस्थित सभी को प्रेरित किया। हिंदी माह के दौरान कविता पाठ, बच्चों के लिए श्रुतलेख, खुलामंच प्रश्नोत्तरी (क्वीज), अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख, आशुभाषण प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त पाइपलाइन के पंप स्टेशन नं. 3 (जोरहाट) में हिन्दी माह समारोह- 2019 के अंतर्गत कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया।

28 सितम्बर, 2019 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब सभागार में प्रात: 9.00 बजे से हिन्दी माह समारोह-2019 का समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि श्री बदरी यादव, अनुसंधान अधिकारी एवं कार्यालय प्रमुख, हिन्दी कार्यान्वयन, पूर्वोत्तर क्षेत्र, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, शिलपुखुरी आमंत्रित थे। कार्यकारी निदेशक (पाला सेवाएं) श्री समीर कुमार दास ने अपने संबोधन में पाइपलाइन मुख्यालय में राजभाषा हिन्दी के नियम और अधिनियम के अनुपालन की स्थिति पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि हमें कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को और बढ़ावा देना चाहिए। आमंत्रित अतिथि द्वय को हिन्दी का प्रखर विद्वान बतलाते हुए उन्होंने सभागार में उपस्थित लोगो से कहा कि दोनो विद्व-जनों के विचारों से हम सभी लाभानवित होंगे। आमंत्रित अतिथि द्वय ने ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि में हिन्दी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार एवं क्रमिक विकास पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि ''राष्ट्र की एकता अखण्डता में हिन्दी भाषा की महती भूमिका है।'' क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण की वकालत करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा को हमें बेहिचक-बेझिझक प्रयोग करना चाहिए। श्रीमंत शंकरदेव का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि असम को शेष भारत से और शेष भारत को असम से परिचित कराने के लिए उन्होंने उस समय एक भाषा की आवश्यकता महसूस की थी और ब्रजावली भाषा को प्रचलन में लाया था। आज विश्व की अनेक भाषाएं लुप्त होने की कगार में है। अत: भाषा संरक्षण में हमें सचेत और सजग रहना चाहिए''।

के जी बेसिन कार्यालय में हिंदी क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 27 नवम्बर 2019 को ऑयल इंडिया लिमिटेड के के. जी. बी. एवं बी. ई. पी. काकीनाडा कार्यालय में हिंदी दिवस मनाया गया तथा इस अवसर पर राजभाषा हिंदी की प्रगति एवं प्रसार के लिए अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। मुख्य रूप से कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी क्विज प्रतियोगिता का भरपूर आनंद उठाया। इस प्रतियोगिता के प्रारम्भ में श्री बी एस राव, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन) ने स्वागत सम्बोधन प्रस्तुत किया तथा मुख्य महाप्रबंधक (केजीबी एवं बीईपी) श्री पवन कुमार ने उपस्थित कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन का माहौल बन चुका है। कार्मिक अब अपना काम हिंदी में कार्य करने का प्रयास करने लगे हैं। केंद्र सरकार की राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन की जो नीति बनी हुई है उसके अनुसार लक्ष्यों को प्राप्ति के गम्भीरता से प्रयास किए जा रहे हैं। हालांकि कार्यालय की कार्य प्रकृति तकनीकी है परंतु कार्मिकों द्वारा यथासम्भव कार्य हिंदी में किया जाना प्रशंसनीय है। उन्होंने इच्छा जाहिर की इसी उत्साह को बनाए रखा जाए। आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि आज हिंदी क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। यह देख कर प्रसन्नता होती है कि इस प्रतियोगिता में सात टीमें भाग ले रही हैं। मैं अपनी ओर से सभी को शुभकामनाएं देता हूं तथा आशा करता हूं कि आप सभी इसी प्रकार हमारी सभी की प्रिय भाषा हिंदी को आगे बढाने का प्रयास करते रहेंगे। डॉ. वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) ने क्विज मास्टर की भूमिका का निर्वहन किया। प्रतियोगिता के अंत में पुरस्कार विजेता टीमों के लिए पुरस्कारों की घोषणा की गई तथा ईनामी राशि का भुगतान ई-भुगतान के माध्यम से कर दिया गया। श्री बी एस राव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। हिन्दी क्विज प्रतियोगिता के कड़े मुकाबले के परिणाम कुछ इस प्रकार रहा: प्रथम पुरस्कार – टीम विक्टोरिया, श्री के एम राव एवं अभिषेक बरुआ, द्वितीय पुरस्कार – टीम बेलूर, श्री एम वी वी एस मूर्ति, श्री एन मेहदी, तृतीय पुरस्कार – टीम हावडा श्री बिजित बरुआ, श्री डी भराली।

कोलकाता कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

दिनांक 23.12.2019 को कोलकाता कार्यालय का निरीक्षण श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा किया गया। निरीक्षण के दौरान श्री ए रॉयचौधुरी, महाप्रबंधक (कोलकाता कार्यालय) तथा डॉ वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) उपस्थित थे। निरीक्षण के समय सहायक निदेशक महोदय द्वारा कार्यालय के विभिन्न दस्तावेज जैसे तिमाही प्रगति रिपोर्ट, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की फाइल, हिंदी प्रशिक्षण रोस्टर, धारा 3(3)/आदेशों की गार्ड फाइल सहित आवक जावक रजिस्टर व नराकास फाइल इत्यादि की जांच की गई। सहायक निदेशक महोदय ने इस पर अपना संतोष अभिव्यक्त किया तथा कोलकाता कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी को लागू करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। निरीक्षण बैठक के अंत में उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के साथ भी चर्चा की तथा उनकी

समस्याएं सुनने के पश्चात अपनी ओर से कई रचनात्मक सुझाव दिए। डॉ वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन करने के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

Oil India Limited
ऑयल राजभाषा सम्मेलन
स्थानः पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग
18 एवं 19 अक्टूबर, 2019
आयोजक
राजभाषा सम्मेलन
राजभाषा सम्मेलन